INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

LATEST EDITION

RAJASTHAN POLICE

राजस्थान उपनिरीक्षक

(S.I.)/प्लाटून कमांडर

HANDWRITTEN NOTES

भाग -2 राजस्थान का इतिहास + कला एवं संस्कृति

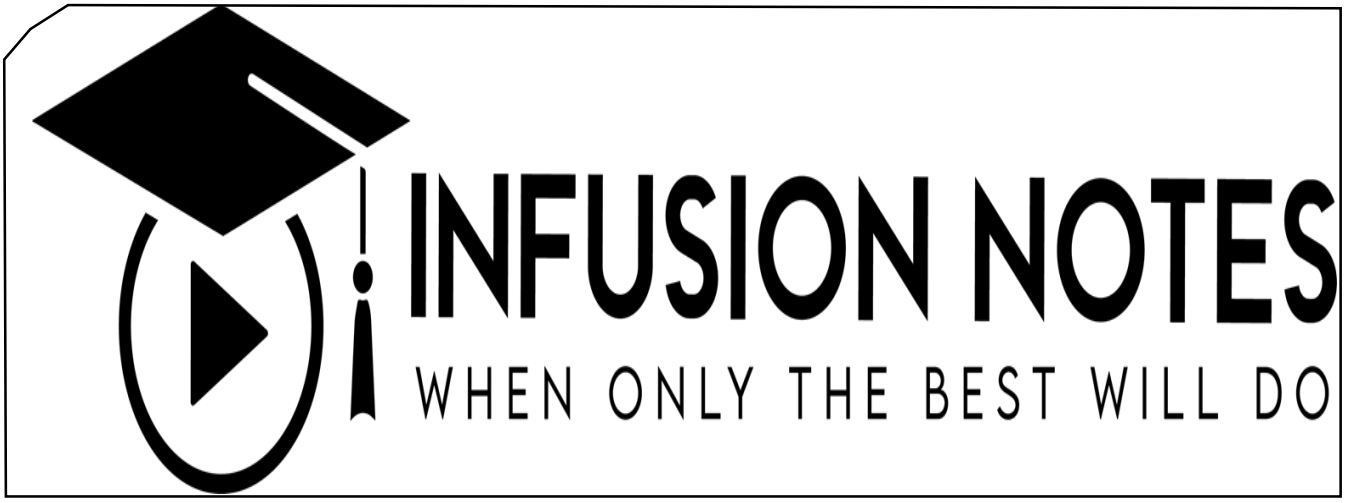

INFUSION NOTES

WHEN ONLY THE BEST WILL DO

राजस्थान

उपनिरीक्षक (S.I) / प्लाटून कमांडर

भाग – 2

राजस्थान का इतिहास + कला एवं संस्कृति

प्रस्तावना

*प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स "**राजस्थान उपनिरीक्षक (SI / प्लाटून कमांडर)** को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है / ये नोट्स पाठकों को **राजस्थान लोक सेवा आयोग (RPSC)** द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा **"राजस्थान उपनिरीक्षक (SI / प्लाटून कमांडर)" की** परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगें /*

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती है / अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं/

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302017 (RAJASTHAN)

मो : 01414045784, 9887809083

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : http://www.infusionnotes.com

Online order करें ➡ https://cutt.ly/o0zXjbh

Whatsapp करें - ➡ https://wa.link/nr1tcz

मूल्य : ₹	**संस्करण : नवीनतम (2023)**

राजस्थान का इतिहास

1. राजस्थान इतिहास के स्रोत 1

2. प्रागैतिहासिक स्थल (सभ्यताएं) 24

3. ऐतिहासिक (केंद्र) 34

4. प्रमुख राजवंशों के महत्वपूर्ण शासकों की राजनीतिक एवं सांस्कृतिक उपलब्धियां 41

5. मध्यकालीन राजस्थान में प्रशासनिक तथा राजस्व प्रणाली 110

6. स्वतंत्रता आंदोलन (1857 का स्वतंत्रता संग्राम) 129

7. राजस्थान में राजनीतिक जागृति 138

8. राजस्थान का एकीकरण 144

9. राजस्थान में किसान एवं जनजाति आंदोलन 150

10.प्रजामण्डल आंदोलन 162

कला संस्कृति

1. वास्तुकला की मुख्य विशेषताएँ – 177

- किले और स्मारक (छतरियाँ)
- राजस्थान की प्रमुख हवेलियाँ

- प्रमुख महल

2. चित्रकला 200

3. हस्त कला / हस्तशिल्प 212

4. राजस्थानी साहित्य की महत्त्वपूर्ण कृतियाँ 221

5. राजस्थान की भाषा व राजस्थान की बोलियाँ 230

6. वेशभूषा एवं आभूषण 235

7. मेले एवं त्यौंहार 239

8. राजस्थान के लोकसंगीत (लोकगीत) 252

9. राजस्थान के प्रमुख लोक नृत्य एवं लोक नाट्य 262

10. राजस्थानी संस्कृति परम्पराएं और विरासत प्रथाएं 280

11. राजस्थान के धार्मिक आंदोलन प्रमुख संत सम्प्रदाय 286

12. राजस्थान के लोक देवता एंव लोक देवियाँ 296

13. महत्त्वपूर्ण पर्यटन स्थल 308

14. राजस्थान के प्रमुख व्यक्तित्व 311

राजस्थान का इतिहास

अध्याय – I

राजस्थान इतिहास के स्रोत

- **राजस्थान इतिहास को जानने के स्रोत :-**
  इतिहास का शाब्दिक अर्थ है – "ऐसा निश्चित रूप से हुआ है"। इतिहास के जनक यूनान के हेरोडोटस को माना जाता है लगभग 2500 वर्ष पूर्व उन्होंने "हिस्टोरिका" नामक ग्रन्थ की रचना की। इस ग्रन्थ में उन्होंने भारत का उल्लेख भी किया है।
  भारतीय इतिहास के जनक मेगस्थनीज माने जाते हैं।
  महाभारत के लेखक "वेदव्यास" माने जाते हैं। महाभारत का प्राचीन नाम "जय सहिंता" था।
- राजस्थान इतिहास के जनक "कर्नल जेम्स टॉड" कहे जाते हैं। वे 1818 से 1822 के मध्य **मेवाड़ (उदयपुर) प्रान्त के पॉलिटिकल** एजेंट थे उन्होंने घोड़े पर घूम-घूम कर राजस्थान के इतिहास को लिखा। अतः कर्नल टॉड को **"घोड़े वाले बाबा"** कहा जाता है। इन्होंने "एनल्स एण्ड एंटीक्विटीज ऑफ राजस्थान" नामक पुस्तकालय का लन्दन में 1829 में प्रकाशन करवाया।
- गौरीशंकर हीराचन्द ओझा (जी.एच. ओझा) ने इसका सर्वप्रथम हिन्दी में अनुवाद करवाया। इस पुस्तक का दूसरा नाम "सेंट्रल एण्ड वेस्टर्न राजपूत स्टेट्स ऑफ इंडिया" है।
- कर्नल जेम्स टॉड की एक अन्य पुस्तक "ट्रेवल इन वेस्टर्न इण्डिया" का इसकी मृत्यु के 1837 में उनकी पत्नी ने प्रकाशन करवाया।
- अभिलेख एवं प्रशस्तियाँ को पत्थर या धातु की सतह पर उकेरे गए लेखों को अभिलेख में सम्मिलित किया जाता है।
- अभिलेखों में शिलालेख, स्तम्भ लेख, मूर्ति लेख, गुहा लेख आदि को सम्मिलित किया जाता है।
- तिथि युक्त एवं समसामयिकी होने के कारण पुरातात्विक स्रोतों के अन्तर्गत अभिलेख सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है।
- प्रारम्भिक अभिलेखों की भाषा संस्कृत थी जबकि मध्यकाल में इनमें उर्दू, फारसी व राजस्थानी भाषा का प्रयोग भी हुआ।
- अभिलेखों के अध्ययन को **एपिग्राफी** कहा जाता है।
- भारत में प्राचीनतम अभिलेख सम्राट अशोक मौर्य के हैं जिनकी **भाषा प्राकृत एवं मगधी तथा लिपि ब्राह्मी मिलती है।**
- शक शासक रूद्रदामन का जूनागढ़ अभिलेख भारत का पहला संस्कृत अभिलेख है।
- राजस्थान के अभिलेखों की मुख्य भाषा संस्कृत एवं राजस्थानी है तथा इनकी लिपि महाजनी एवं हर्ष लिपि है।
- फारसी भाषा मे लिखा सबसे पुराना लेख अजमेर के अढ़ाई दिन के झोंपड़े की दीवार के पीछे लिखा हुआ मिला है। यह लेख लगभग 1200 ई. का है।

अशोक के अभिलेख :-

- मौर्य सम्राट अशोक के दो अभिलेख भाब्रू अभिलेख तथा बैराठ अभिलेख बैराठ की पहाड़ी से मिले है।
- भाब्रू अभिलेख की खोज कैप्टेन बर्ट द्वारा बीजक की पहाड़ी से की गई। इस अभिलेख से अशोक के बौद्ध धर्म के अनुयायी होने तथा राजस्थान में मौर्य शासन होने की जानकारी मिलती है।
- अशोक का भाब्रू अभिलेख वर्तमान में **कलकत्ता संग्रहालय** में सुरक्षित है।

बड़ली का अभिलेख :-

- यह राजस्थान का सबसे **प्राचीनतम अभिलेख** है। 443 ई. पूर्व का यह अभिलेख अजमेर के बड़ली गाँव के भिलोत माता मंदिर से पं. गौरीशंकर हीराचन्द ओझा को प्राप्त हुआ।
- वर्तमान में यह **अजमेर संग्रहालय में सुरक्षित है।**

बसंतगढ़ अभिलेख (625 ई.):-

- राजा वर्मलात के समय का यह अभिलेख बसंतगढ़ (सिरोही) से प्राप्त हुआ है।
- इससे अर्बुदांचल के राजा राज्जिल तथा उसके पुत्र सत्यदेव के बारे में जानकारी मिलती है।
- इसका लेखक द्विजन्मा तथा उत्कीर्णकर्ता नागमुण्डी था।
- दधिमति माता अभिलेख के बाद यह पश्चिमी राजस्थान का सबसे प्राचीन अभिलेख है।
- इस अभिलेख में सामन्त प्रथा का उल्लेख मिलता है।

- शिलालेख में मेवाड़ के गुहिल वंश शासक शिलादित्य का उल्लेख है।

मानमोरी का अभिलेख :-

- 713 ई. का यह अभिलेख मानसरोवर झील (चित्तौड़गढ़) के तट पर उत्कीर्ण है।
- इस अभिलेख में इसके **रचयिता पुष्य** तथा उत्कीर्णकर्ता शिवादित्य का उल्लेख है।
- इस अभिलेख से चित्तौड़गढ़ दुर्ग का निर्माण करने वाले चित्रांग (चित्रांगद) के बारे में जानकारी मिलती है।
- राजा भोज के पुत्र मान द्वारा मानसरोवर झील के निर्माण करवाये जाने का उल्लेख भी इसमें मिलता है।
- यह अभिलेख कर्नल जेम्स टॉड द्वारा इंग्लैण्ड ले जाते समय समुद्र में फेंक दिया गया था।
- इस अभिलेख में '**अमृत मंथन**' का उल्लेख मिलता है।
- इस अभिलेख में चार मौर्य शासकों **(महेश्वर, भीम, भोज एवं मान)** के बारे में जानकारी मिलती है।

मण्डौर अभिलेख :-

- जोधपुर के मंडोर में स्थित 837 ई. के इस अभिलेख में गुर्जर-प्रतिहार शासकों की वंशावली विष्णु तथा शिव पूजा का उल्लेख किया गया है। इस अभिलेख की रचना गुर्जर-प्रतिहार शासक बाउक द्वारा करवाई गई थी।

प्रतापगढ़ अभिलेख (946 ई.):-

- प्रतापगढ़ में स्थित इस अभिलेख में गुर्जर प्रतिहार शासक महेन्द्रपाल की उपलब्धियों का वर्णन किया गया है।

बड़वा अभिलेख (238 – 239 ई.) :-

- यह बड़वा (कोटा) में स्तम्भ पर उत्कीर्ण मौखरी वंश के शासकों का सबसे प्राचीन अभिलेख है। संस्कृत भाषा में लिखित इस अभिलेख से मौखरी शासकों बल, सोमदेव, बलसिंह आदि की उपलब्धियों की जानकारी प्राप्त होती है।
- यह 3 यूप पर खुदा हुआ है।

कणसवा का अभिलेख :-

- 738 ई. का यह अभिलेख कोटा के निकट कणसवा गाँव में उत्कीर्ण है जिसमें मौर्य वंश के राजा धवल का उल्लेख मिलता है।
- **राजा धवल को अंतिम मौर्य वंशी राजा माना जाता है।**

आदिवराह मंदिर का अभिलेख :-

- 944 ई. का यह लेख उदयपुर के आदिवराह मंदिर से प्राप्त हुआ है जो संस्कृत में ब्राह्मी लिपि में उत्कीर्ण है।
- यह लेख मेवाड़ के शासक भर्तृहरि द्वितीय के समय का है।
- इसके अनुसार आहड़ एक धर्म स्थल के रूप में प्रसिद्ध था।

सुण्डा पर्वत अभिलेख :-

- जालौर स्थित सुण्डा पर्वत का यह अभिलेख चौहान शासक **चाचिगदेव** के समय का है जिससे इसकी उपलब्धियों तथा शासन के बारे में जानकारी प्राप्त होती है।

अचलेश्वर का अभिलेख (1285 ई.) :-

- यह अभिलेख संस्कृत भाषा में अचलेश्वर मंदिर के पास दीवार पर उत्कीर्ण है इसके रचयिता शुभचंद्र तथा उत्कीर्णकर्ता कर्मसिंह थे।
- इस अभिलेख में **'बापा'** से **'महाराणा समरसिंह'** तक की वंशावली का उल्लेख है।
- इसमें हारीत ऋषि की तपस्या तथा उनके आशीर्वाद से बापा को राज्य प्राप्ति का उल्लेख है।

किराडू का लेख :-

- 1161 ई. का यह लेख किराडू के शिव मंदिर में उत्कीर्ण है जिसकी भाषा संस्कृत है।
- इस लेख में परमारों की उत्पत्ति ऋषि वशिष्ठ के आबू यज्ञ से बतायी गई है।
- इस प्रशस्ति में किराडू की परमार शाखा का वंशक्रम दिया गया है।

सांडेराव का लेख :-

- 1164 ई. का यह लेख देसूरी के पास सांडेराव के महावीर जैन मंदिर में उत्कीर्ण है।
- यह लेख कल्हणदेव के समय का है जिसमें उसके परिवार द्वारा मंदिर के लिए दिये गए दान का उल्लेख मिलता है।

अध्याय – 2
प्रागैतिहासिक स्थल (सभ्यताएं)

- **पाषाणकालीन सभ्यता**

1. बागौर (भीलवाड़ा)

प्रिय छात्रों किसी भी सभ्यता का विकास किसी नदी के किनारे होता है क्योंकि जल ही जीवन है जल की आवश्यकता खेती के लिए और अन्य उपयोगों के लिए की पड़ती है।

- इसी प्रकार भीलवाड़ा जिले की माण्डल तहसील में कोठारी नदी के तट पर स्थित इस पुरातात्विक स्थल का उत्खनन 1967-68 से 1969-70 की अवधि में राजस्थान राज्य पुरातत्व विभाग एवं दक्कन कॉलेज, पुणे के तत्त्वावधान में श्री वी.एन. मिश्र एवं डॉ. एल.एस. लेशनि के नेतृत्व में हुआ है
- यहाँ से मध्य पाषाणकालीन (Mesolithic) लघु पाषाण उपकरण व वस्तुएँ (Microliths) प्राप्त हुई हैं।
- बागौर के उत्खनन में प्राप्त प्रस्तर उपकरण काल विभाजन के क्रम से तीन चरणों में विभाजित किये गये हैं। प्रथम चरण 3000 वर्ष ईसा पूर्व से लेकर 2000 वर्ष ईसा पूर्व तक, द्वितीय चरण 2000 वर्ष ईसा पूर्व से 500 वर्ष ईसा पूर्व का एवं तृतीय चरण 500 वर्ष ईसा पूर्व से लेकर प्रथम ईस्वी सदी तक की मानव सभ्यता की कहानी कहता है ।
- इन पाषाण उपकरणों को **स्फटिक** (Quartz) एवं चर्ट पत्थरों से बनाया जाता था। इनमें मुख्यतः पृथुक (Flake), फलक (Blade) एवं अपखण्ड (Chip) बनाये जाते थे। ये उपकरण आकार में बहुत छोटे (लघु अश्म उपकरण- Microliths) थे।
- बागौर में उत्खनन में पाषाण उपकरणों के साथ-साथ एक मानव कंकाल भी प्राप्त हुआ है।
- यहाँ पाये गये लघु पाषणा उपकरणों में ब्लेड, छिद्रक, स्क्रेपर, बेधक एवं चांद्रिक आदि प्रमुख हैं।
- ये पाषाण उपकरण चर्ट, जैस्पर, चाल्डेसनी, एगेट, क्वार्टजाइट, फ्लिंट जैसे कीमती पत्थरों से बनाये जाते थे । ये आकार में बहुत छोटे आधे से पौने इंच के औजार थे ये छोटे उपकरण संभवतः किसी लकड़ी या हड्डी के बड़े टुकड़ों पर आगे लगा दिये जाते थे।
- इन्हें मछली पकड़ने, जंगली जानवरों का शिकार करने, छीलने, छेद करने आदि कार्यों में प्रयुक्त किया जाता था। इन उपकरणों से यहाँ के लोगों का मुख्य व्यवसाय आखेट करना एवं कंद-मूल फल एकत्रित करने की स्थिति पर प्रकाश पड़ता है।
- यहाँ के प्रारंभिक स्तरों पर घर या फर्श के अवशेष नहीं मिलना साबित करता है कि यहाँ का मानव घुमक्कड़ जीवन जीता होगा।
- बागौर में द्वितीय चरण के उत्खनन में केवल 5 ताम्र उपकरण मिले हैं, जिसमें एक सूई (10.5 सेमी लम्बी), एक कुन्ताग्र (Spearhead), एक त्रिभुजाकार शस्त्र, जिसमें दो छेद हैं, प्रमुख हैं ।
- इस चरण के उत्खनन में मकानों के अवशेष भी मिले हैं जिससे पुष्टि होती है कि इस समय मनुष्य ने एक स्थान पर स्थायी जीवन जीना प्रारम्भ कर दिया था।
- इस काल की प्राप्त हड्डियों में गाय, बैल, मृग, चीतल, बारहसिंघा, सूअर, गीदड़, कछुआ आदि के अवशेष मिले हैं।
- कुछ जली हुई हड्डियाँ व मांस के भुने जाने के प्रमाण मिलने से अनुमान है कि इस काल का मानव मांसाहारी भी था तथा कृषि करना सीख चुका था।
- उत्खनन के तृतीय चरण में हड्डियों के अवशेष बहुत कम होना स्पष्ट करता है कि इस काल (500 ई. पूर्व से ईसा की प्रथम सदी) में मानव संस्कृति में कृषि की प्रधानता हो गई थी ।
- **बागौर उत्खनन** में कुल **5 कंकाल** प्राप्त हुए हैं, जिनसे स्पष्ट होता है कि शव को दक्षिण पूर्व-उत्तर पश्चिम में लिटाया जाता था तथा उसकी टांगे मोड़ दी जाती थी।
- सभ्यता के तृतीय चरण में शव को उत्तर-दक्षिण में लिटाने एवं टांगे सीधी रखने के प्रमाण मिले हैं।
- शव को मोती के हार, ताँबे की लटकन, मृद्‌भाण्ड, मांस आदि सहित दफनाया जाता था। खाद्य पदार्थ व पानी हाथ के पास रखे जाते थे तथा अन्य वस्तुएँ आगे-पीछे रखी जाती थी।
- तृतीय चरण के एक कंकाल पर ईंटों की दीवार भी मिली है, जो समाधि बनाने की द्योतक है। मिट्टी के बर्तन यहाँ के द्वितीय चरण एवं तृतीय चरण के उत्खनन में मिले हैं।
- द्वितीय चरण के मृद्‌भाण्ड मटमैले रंग के, कुछ मोटे व जल्दी टूटने वाले थे। इनमें शरावतनें, तश्तरियाँ, कटोरे, लोटे, थालियाँ, तंग मुँह के घड़े व बोतलें आदि मिली हैं। (ये मृद्‌भाण्ड रेखा वाले तो थे परन्तु इन पर अलंकरणों का अभाव था।

- ऊपर से लाल रंग लगा हुआ हैं। ये सभी हाथ से बने हुए हैं) (तृतीय चरण के मृदभाण्ड पतले एवं टिकाऊ हैं तथा चाक से बने हुए हैं। इन पर रेखाओं के अवशेष मिले हैं, परन्तु अलंकरण बहुत कम मिले हैं।
- (आभूषण: बागौर सभ्यता में मोतियों के आभूषण तीनों स्तरों के उत्खनन में प्राप्त हुए हैं। हार तथा कान की लटकनों में मोती बहुतायत से प्रयुक्त किये जाते थे।
- ये मोती एगेट, इन्द्रगोप व काँच के बने होते थे। मकान : बागौर में मकानों के अवशेष द्वितीय एवं तृतीय चरण में प्राप्त हुए हैं। हार तथा कान की लटकनों में मोती बहुतायत से प्रयुक्त किये जाते थे। ये मोती एगेट, इन्द्रगोप व काँच के बने होते थे।)
- **मकान : बागौर में मकानों के अवशेष द्वितीय एवं तृतीय चरण** में प्राप्त हुए हैं। मकान पत्थर के बने हैं। फर्श में भी पत्थरों को समतल कर जमाया जाता था।
- बागौर में मध्यपाषाणकालीन पुरावशेषों के अलावा लौह युग के उपकरण भी प्राप्त हुए हैं। इस सभ्यता के प्रारंभिक निवासी आखेट कर अपना जीवन यापन करते थे। परवर्ती काल में वे पशुपालन करना सीख गये थे। बाद में उन्होंने कृषि कार्य भी सीख लिया था।

कांस्ययुगीन सभ्यताएं -

2. कालीबंगा की सभ्यता -

कालीबंगा की सभ्यता एक नदी के किनारे बसी हुई थी। नदी का नाम है - **सरस्वती नदी**। इसे **द्वेषनदी, मृतनदी, नटनदी** के नाम से भी जानते हैं।

यह सभ्यता हनुमानगढ़ जिले में विकसित हुई थी हनुमानगढ़ जिले में एक अन्य सभ्यता जिसे **पीलीबंगा** की सभ्यता कहते हैं विकसित हुई।

इस सभ्यता की खोज -

- इस सभ्यता की सबसे पहले जानकारी देने वाले एक पुरातत्ववेत्ता एवं भाषा शास्त्री एल.पी. टेस्सिटोरी थे। इन्होंने ही इस सभ्यता के बारे में सबसे पहले परिचय दिया लेकिन इस सभ्यता की तरफ किसी का पूर्णरूप से ध्यान नहीं था इसलिए इसकी खोज नहीं हो पाई।
- इस सभ्यता के खोजकर्ता **अमलानंद घोष** हैं। इन्होंने 1952 में सबसे पहले इस सभ्यता की खोज की थी।
- इनके बाद में इस सभ्यता की खोज दो अन्य व्यक्तियों के द्वारा भी की गई थी जो 1961 से 1969 तक चली थी।

1. **बृजवासीलाल (बी.बी. लाल)**
2. **बीके (बालकृष्ण) थापर**

इन्हीं दोनों ने इस सभ्यता की विस्तृत रूप से खोज की थी

एल.पी. टेस्सिटोरी के बारे में -

- ये इटली के के निवासी थे। इनका जन्म सन् 1887 में हुआ। और यह अप्रैल 1914 ईस्वी में भारत मुंबई आए। जुलाई 1914 में यह जयपुर (राजस्थान) आये। बीकानेर राज्य इनकी कर्म स्थली रहा है।
- उस समय के तत्कालीन राजा महाराजागंगा सिंह जी ने इन्हें अपने राज्य के सभी प्रकार के चारण साहित्य लिखने की जिम्मेदारी दी।
- बीकानेर संग्रहालय भी इन्होंने ही बनवाया है ये एक भाषा शास्त्री एवं पुरातत्ववेत्ता थे उन्होंने राजस्थानी भाषा के दो प्रकार बताए थे।

1. पूर्वी राजस्थानी 2. पश्चिमी राजस्थानी

- इस सभ्यता का कालक्रम **कार्बन डेटिंग पद्धति** के अनुसार 2350 ईसा पूर्व से 1750 ईसा पूर्व माना जाता है।
- कालीबंगा शब्द "सिंधीभाषा" का एक शब्द है जिसका शाब्दिक अर्थ होता है - **"काले रंग की चूड़िया"**। इस स्थल से काले रंग की चूड़ियों के बहुत सारी ढेर प्राप्त हुए इसलिए इस सभ्यता को कालीबंगा सभ्यता नाम दिया गया।
- कालीबंगा की सभ्यता भारत की ऐसी पहली सभ्यता स्थल है जो **स्वतंत्रता के बाद खोजी** गई थी। यह एक **कांस्य युगीन सभ्यता** है।
- हनुमानगढ़ जिले से इस सभ्यता से संबंधित जो भी वस्तुएं प्राप्त हुई है उनको सुरक्षित रखने के लिए राजस्थान सरकार के द्वारा **1985-86 में कालीबंगा संग्रहालय** की स्थापना की गई थी। यह संग्रहालय **हनुमानगढ़** जिले में स्थित है।

इस सभ्यता की विशेषताएँ –

- इस सभ्यता की सड़कें एक दूसरे को **समकोण** पर काटती थी । इसलिए यहाँ पर मकान बनाने की पद्धति को **"ऑक्सफोर्ड पद्धति"** कहते हैं। इसी पद्धति को '**जाल पद्धति, ग्रीक, चेम्सफोर्ड पद्धति**' के नाम से भी जानते हैं।
- मकान कच्ची एवं पक्की ईंट के बने हुए थे, आरम्भ में यें कच्ची ईंटें थीं इसलिए इस सभ्यता को दीन हीन सभ्यता भी कहते हैं । इन ईंटों का आकार 30×15×7.5 है ।
- इन मकानों की खिड़की एवं दरवाजे पीछे की ओर होते थे ।
- यहाँ पर जो नालियां बनी हुई थी वह लकड़ी (काष्ठ) की बनी होती थी। आगे चलकर इन्हीं नालियों का निर्माण पक्की ईंटों से होता था ।
  (विश्व में एकमात्र ऐसा स्थान जहां लकड़ियों की बनी नालियाँ मिली है वह कालीबंगा स्थल है) **(परीक्षा की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण)**
- विश्व की प्राचीनतम **जुते हुए खेत** के प्रमाण इसी सभ्यता से मिले हैं।
- यहाँ पर मिले हुए मकानों के अंदर की दीवारों में दरारें मिलती हैं इसलिए माना जाता है कि विश्व में प्राचीनतम भूकंप के प्रमाण यहीं से प्राप्त होते हैं।
- यहाँ के लोग एक साथ में **दो फसलें** करते थे अर्थात् फसलों के होने के प्रमाण भी यहीं से मिलते हैं **जौ और गेहूं।**
- यहाँ पर उत्खनन के दौरान **यज्ञकुंड / अग्नि वेदिकाएं** प्राप्त हुए हैं यहाँ के लोग **बलिप्रथा** में भी विश्वास रखते थे।
- इस सभ्यता का पालतू जीव **कुत्ता** था। इस सभ्यता के लोग **ऊँट** से भी परिचित थे इसके अलावा **गाय, भैंस, बकरी, घोड़ा से** भी परिचित थे ।
- विश्व में प्राचीनतम् नगर के प्रमाण यहीं पर मिले हैं इसलिए इसे **नगरीय सभ्यता** भी कहते हैं यहाँ पर मूर्तिपूजा, देवी / देवता के पूजन, चित्रांकन या मूर्ति का कोई प्रमाण नहीं मिला है।
- यहाँ पर समाधि प्रथा का प्रचलन था । यहाँ पर **समाधि तीन प्रकार** की मिलती है अर्थात् तीन प्रकार से मृतक का अंतिम संस्कार किया जाता था
- अंडाकार गड्ढा खोदकर व्यक्ति को दफनाना । इस गड्ढे में व्यक्ति का सिर उत्तर की ओर पैर दक्षिण की ओर होते थे ।
- अंडाकार गड्ढा खोदकर व्यक्ति को तोड़ मरोड़ कर इकट्ठा करके दफनाना ।
- एक गड्ढा खोदकर व्यक्ति के साथ आभूषण को दफनाना ।
- **स्वास्तिक चिह्न** का प्रमाण इसी कालीबंगा सभ्यता से प्राप्त होता है इस स्वास्तिक चिह्न का प्रयोग यहाँ के लोग वास्तुदोष को दूर करने के लिए करते थे ।
- कालीबंगा की सभ्यता और मेसोपोटामिया की सभ्यता की **समानता** के प्रमाण **बेलनाकार बर्तन** में मिलते हैं।
- यहाँ पर एक **कपाल** मिला है **जिसमें छः प्रकार के छेद** थे। जिससे अनुमान लगाया जाता है कि यहाँ के लोग **शल्य चिकित्सा** से परिचित थे अर्थात् शल्य चिकित्सा के प्राचीनतम प्रमाण इसी सभ्यता से मिले हैं ।
- यहाँ पर एक सिक्का प्राप्त हुआ है जिसके एक ओर स्त्री का चित्र है तथा दूसरी ओर **चीता** का चित्र बना हुआ है अर्थात् अनुमान लगाया जा सकता है कि यहाँ पर परिवार की **मातृसत्तात्मक प्रणाली** का प्रचलन था।
- कालीबंगा सभ्यता को सिंधु सभ्यता की **तीसरी राजधानी** कहा जाता है।
- कालीबंगा सभ्यता में पुरोहित का प्रमुख स्थान होता था।
- इस सभ्यता के लोग मध्य एशिया से व्यापार करते थे, इसका प्रमाण **सामूहिक तंदूर** से मिलता है क्योंकि तंदूर मध्य-एशिया से संबंधित है।
- इस सभ्यता के भवनों का **फर्श सजावट** एवं अलंकृत के रूप में मिलता है।

कालीबंगावासियों का सामाजिक जीवन

- उत्खनन से अनुमान लगाया जाता है कि कालीबंगा के समाज में धर्मगुरु (पुरोहित), चिकित्सक, कृषक, कुंभकार, बढ़ई, सुनार, दस्तकार, जुलाहे, ईंट एवं मनके निर्माता, मुद्रा (मोहरें) निर्माता, व्यापारी आदि धन्धों के लोग निवास करते थे।
- कालीबंगा वासियों के नागरिक जीवन में त्यौहार एवं धार्मिक उत्सवों का पर्याप्त महत्त्व था। इसके साथ ही खिलौने, पासे, मत्स्य काँटे आदि के अवशेषों से अनुमान है कि इनके जीवन में मनोरंजन का पर्याप्त महत्व था। संभवतः ये **शाकाहारी एवं मांसाहारी** दोनों होते थे। खाद्य

सामग्रियों में फल, फूल, दूध, दही, जौ, गेहूँ, मांस आदि का प्रयोग होता था।

मृतक संस्कार :

कालीबंगा के निवासियों की **तीन प्रकार** की **समाधियाँ (कब्रें)** मिली हैं।

- शवों को अण्डाकार गड्ढे में उत्तर की ओर सिर रखकर मृत्यु संबंधी उपकरणों के साथ गाड़ते थे।
- दूसरे प्रकार की समाधियों में **शव की टाँगे समेटकर** गाड़ा जाता था।
- तीसरे प्रकार में शव के साथ बर्तन और एक-एक सोने व मणि के दाने की माला से विभूषित कर गाड़ा जाता था।
- उत्खनन में जो शवाधान प्राप्त हुए हैं उनसे यह स्पष्ट हो जाता है कि वे मृत्युपरांत किसी न किसी प्रकार का विश्वास अवश्य रखते थे, क्योंकि मृतकों के साथ खाद्य सामग्री, आभूषण, मनके, दर्पण तथा विभिन्न प्रकार के मदभाण्ड आदि रखे जाते थे।
- यहाँ मोहनजोदड़ो की भाँति लिंग, मातृशक्ति आदि की **मूर्तियाँ** नहीं मिली है, जिससे यहाँ के निवासियों की धार्मिक भावना का पता नहीं चल पाया है। यहाँ की **लिपि दाँये से बाँये** लिखी प्रतीत होती है साथ ही अक्षर एक-दूसरे के ऊपर खुदे हुए प्रतीत होते हैं।

आर्थिक जीवन :

- कालीबंगा के भग्नावशेषों से अनुमान लगाया जा सकता है कि अधिकांश लोगों का जीवन सामान्य रूप से समृद्ध था। सुख एवं समृद्धि के लिए लोगों ने विभिन्न साधनों का उपयोग किया था।
- कालीबंगा के निवासी कौन-कौन से पशु पालते थे, इसका ज्ञान हमें पशुओं के अस्थि अवशेषों, मृद पात्रों पर किये गये चित्रांकनों, मुद्रांकनों तथा खिलौनों से होता है। ये भेड़-बकरी, गाय, भैंस, बैल, भैंसा तथा सुअर आदि पशुओं को पालते थे। कालीबंगा के निवासी ऊँट भी पालते थे। कुत्ता भी उनका पालतू जीव था।
- **सरस्वती दृषद्वती नदियों** द्वारा लाई जाने वाली मिट्टी कृषि जन्य उत्पादों के लिए बहुत उपजाऊ थी। इसमें वे जौ और गेहूँ की खेती करते थे। हल लकड़ी के रहे होंगे। सिंचाई के लिए नदी जल एवं वर्षा पर निर्भर थे। कालीबंगा के कृषक निश्चय ही 'अतिरिक्त उत्पादन' करते थे।
- हड़प्पा सभ्यता के नगरों को समृद्धि का प्रमुख कारण व्यापार एवं वाणिज्य था। यह जल एवं स्थल दोनों मार्गों से होता था। **लोथल (गुजरात)** इस सभ्यता में तत्कालीन युग का एक महत्त्वपूर्ण **सामुद्रिक व्यापारिक** केन्द्र था।
- कालीबंगा से मुख्यतः हड़प्पा संस्कृति के मुख्य केन्द्रों को अनाज, मनके तथा ताँबा भेजा जाता था।
- ताँबे का प्रयोग, अस्त्र-शस्त्र तथा दैनिक जीवन में उपयोग आने वाले उपकरण, बर्तन एवं आभूषण बनाने में होता था।
- स्थानीय उद्योग पर्याप्त विकसित थे। कुंभकार का **मृद्भाण्ड उद्योग** अत्यन्त विकसित था।
- वह विभिन्न प्रकार के मृदभाण्ड चाक पर बनाता था, जिन्हें भट्टों में अच्छी तरह पकाया जाता था। मृद्भाण्डों में मुख्यरूप से मर्तबान, कलश, बीकर, टस्तरियाँ, प्याले, टोंटीदार बर्तन, डिंद्रित भाण्ड एवं थालियाँ शामिल हैं। हस्त निर्मित कुछ बड़े मृदभाण्ड भी प्राप्त हुए हैं जो संभवतः अन्न आदि संग्रह हेतु काम में लिए जाते थे।
- इन मृदभाण्डों पर **काले एवं सफेद** वर्णकों से चित्रण भी किया जाता था, जिसमें आड़ी-तिरछी रेखाएँ, लूप, बिन्दुओं का समूह, वर्ग, वर्ग जालक, त्रिभुज, तरंगाकार रेखाएँ अर्द्धवृत्त, एक-दूसरे को काटते वृत्त, शल्कों का समूह आदि के प्रारूपण प्रमुख हैं।
- इसके अतिरिक्त पीपल की पत्तियों तथा चौपत्तिया फूल आदि वानस्पतिक पादपों का अंकन भी प्राप्त हुआ है।
- बड़े बर्तनों पर **'कुरेदकर'** भी **अलंकरण** किया गया हैं। किन्हीं-किन्हीं मृदपात्रों पर 'ठप्पे' भी लगे हुए मिले हैं और किसी-किसी पर तत्कालीन लिपि में लिखे लेख भी प्राप्त हुए हैं। उत्खनन में विभिन्न प्रकार की मुद्राएँ (मोहरें), मूर्तियाँ, चूड़ियाँ, मनके, औजार आदि से ज्ञात होता है कि हड़प्पा सभ्यता कालीन कालीबंगा समाज में शिल्पकला का उचित स्थान रहा है।
- सोना, चाँदी अर्द्ध बहुमूल्य पत्थर, शंख से आभूषणों का निर्माण किया जाता था। स्त्रियाँ कानों में कर्णाभरण, कर्णफूल, बालियाँ आदि पहनती थी एवं बालों में पिनों का प्रयोग करती थी गले में मनकों के हार धारण करती थी।

पंडित झाबरमल्ल शोध संस्थान जयपुर	2000
राजस्थान संगीत नाटक अकादमी)जोधपुर(	1957
प्राविधिक शिक्षा निदेशालय)जोधपुर(	17 अगस्त, 1956
पश्चिमी क्षेत्र का सांस्कृतिक केंद्र)उदयपुर(	1986
भारतीय लोक कला मण्डल)उदयपुर(	1952

राजस्थान के प्रमुख शोध संस्थान –

संस्थान का नाम	**मुख्यालय**
राजकीय संग्रहालय	झालावाड़
श्री सरस्वती पुस्तकालय	**फतेहपुर)सीकर(**
पुस्तक प्रकाश पुस्तकालय	जोधपुर
पोथीखाना) महत्त्वपूर्ण(	**जयपुर**
सरस्वती भण्डार	**उदयपुर**
रूपायन संस्थान	**जोधपुर**
बिड़ला तकनीकी म्यूजियम	पिलानी)झुंझुनू(
राजस्थानी शोध संस्थान	चौपासनी)जोधपुर(
राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी	जयपुर
राजस्थानी साहित्य अकादमी	उदयपुर
राजस्थान संस्कृत अकादमी	जयपुर
राजस्थान उर्दू अकादमी	जयपुर
राजस्थान सिंधी अकादमी	जयपुर
राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी	जयपुर
पंडित झाबरमल शोध संस्थान	जयपुर
राजस्थानी भाषा साहित्य एवं संस्कृति अकादमी	**बीकानेर**
सरदार म्यूजियम	जोधपुर

अध्याय – 5

प्रमुख राजवंशों के महत्वपूर्ण शासकों की राजनीतिक एवं सांस्कृतिक उपलब्धियां

गुर्जर प्रतिहार वंश

- गुर्जर प्रतिहारों ने लगभग 200 सालों तक अरब आक्रमणकारियों का प्रतिरोध किया।
- डॉ. आर सी. मजूमदार के अनुसार-गुर्जर प्रतिहारों ने छठी से ।।वीं शताब्दी तक अरब आक्रमणकारियों के लिए बाधक का कार्य किया।
- जोधपुर के **बाँक शिलालेख** के अनुसार गुर्जर प्रतिहारों का अधिवास मारवाड़ में लगभग 6वीं शताब्दी के द्वितीय चरण में हो चुका था।
- 8वीं-10वीं शताब्दी में उत्तर भारत में मंदिर व स्थापत्य निर्माण शैली **महाभारत शैली / गुर्जर-प्रतिहार शैली** प्रचलित थी।
- अग्निकुल के राजपूतों में सर्वाधिक प्रसिद्ध प्रतिहार वंश था, जो गुर्जरों की शाखा या गुर्जरात्रा प्रदेश से संबंधित होने के कारण इतिहास में **गुर्जर-प्रतिहार** के नाम से जाना गया।
- गुर्जर प्रतिहारों का प्रभाव केन्द्र मारवाड़ था। गुर्जरात्रा प्रदेश में रहने के कारण प्रतिहार **गुर्जर प्रतिहार** कहलाए।
- गुर्जरात्रा प्रदेश की राजधानी **"भीनमाल (जालौर)"** थी। बाणभट्ट ने अपनी पुस्तक ' हर्षचरित ' में गुर्जरों का वर्णन किया है।
- इस वंश की प्राचीनता बादामी के चालुक्य नरेश पुल्केशिन द्वितीय के ऐहोल अभिलेख में 'गुर्जर जाति' के **सर्वप्रथम** उल्लेख से मिलती है।
- डॉ. आर. सी. मजूमदार के अनुसार-प्रतिहार शब्द का प्रयोग मण्डौर की प्रतिहार जाति के लिए हुआ है क्योंकि प्रतिहार अपने आप को लक्ष्मण जी का वंशज मानते थे।
- चीनी यात्री ह्वेनसांग के यात्रा वृतांत (ग्रंथ) सियूकी में **कु-ची-लो (गुर्जर)** देश का उल्लेख करता है।
- जिसकी राजधानी **पि-लो-मो-लो** (भीनमाल) में थी। अरबी यात्रियों ने गुर्जरों को **'जुर्ज'** भी कहा है।

- ***अल मसूदी प्रतिहारों*** *को अल गुर्जर तथा प्रतिहार राजा को* ***'बोरा'*** *कहकर पुकारता है। भगवान लाल इन्द्रजी ने गुर्जरों को 'गुजर' माना है, जो गुजरात में रहने के कारण गुर्जर कहलाए ।*
- *देवली, राधनपुर तथा करडाह अभिलेखों में प्रतिहारों को गुर्जर प्रतिहार कहा गया है । डॉ. गौरीशंकर ओझा प्रतिहारों को क्षत्रिय मानते हैं । जॉर्ज केनेडी गुर्जर प्रतिहारों को* ***ईरानी मूल*** *के बताते हैं ।*
- ***मिस्टर जैक्सन*** *ने बम्बई गजेटियर में गुर्जरों को विदेशी माना है ।*
- *प्रतिहार राजवंश महामारू मंदिर निर्माण वास्तुशैली का संरक्षक था ।* ***कनिंघम*** *ने गुर्जर प्रतिहारों को कुषाणवंशी कहा है ।*
- *डॉ. भंडारकर ने गुर्जर प्रतिहारों को खिज्रों की संतान बताकर विदेशी साबित किया है।*
- *स्मिथ स्टेनफोनो ने गुर्जर प्रतिहारों को हूणवंशी कहा है ।*
- *भोज गुर्जर प्रतिहार वंश का शासक था ।*
- *भोज द्वितीय प्रतिहार राजा के काल में प्रसिद्ध ग्वालियर प्रशस्ति की रचना की गई।* ***मुहणौत नैणसी*** *(मारवाड़ रा परगना री विगत) के अनुसार-गुर्जर प्रतिहारों की कुल 26 शाखाएं थी इनमें से दो प्रमुख थी - मण्डौर व भीनमाल ।*
- *गुर्जर प्रतिहारों की कुल देवी चामुंडा माता थी ।*

भीनमाल शाखा (जालौर)

गुर्जर प्रतिहार वंश

गुर्जर प्रतिहार वंश *– प्रतिहार शब्द वास्तव में पदनाम है जिसका अर्थ द्वारपाल है। अभिलेखिक रूप से गुर्जर जाति का उल्लेख सर्वप्रथम चालुक्य शासक पुलकेशिन द्वितीय के एहोल अभिलेख में हुआ है।*

- *उत्तर-पश्चिम भारत में गुर्जर प्रतिहार वंश का शासन छठी से बारहवीं शताब्दी तक रहा।*
- *इतिहासकार रमेशचन्द्र मजूमदार ने गुर्जर प्रतिहार को छठी से बारहवीं शताब्दी तक अरब आक्रमणकारियों के लिए बाधक का काम करने वाला बताया है।*
- *गुर्जरात्रा (गुर्जर प्रदेश) के स्वामी होने के कारण प्रतिहारों को गुर्जर प्रतिहार कहा गया है।*
- *नीलगुण्ड, राधनपुर, देवली तथा करहाड़ के अभिलेखों में इन्हें गुर्जर कहा गया।*
- *मिहिरभोज के ग्वालियर अभिलेख में नागभट्ट को रामका प्रतिहार तथा विशुद्ध क्षत्रिय कहा गया है।*
- *अरब यात्रियों ने इनके लिए 'जुर्न' शब्द का प्रयोग किया है। अलमसूदी ने गुर्जर प्रतिहारों को 'अल गुजर' तथा राजा को 'बोरा' कहा है।*
- *राजशेखर ने अपने ग्रंथ 'विद्वशालभंजिका' में प्रतिहार महेन्द्रपाल को रघुकुल तिलक (सूर्यवंशी) लिखा है।*
- *मुहणोत नैणसी ने प्रतिहारों की 26 शाखाओं का उल्लेख किया है।*
- *चीनी यात्री ह्वेनसांग ने अपने ग्रंथ 'सियूकी' में गुर्जर राज्य को 'कु-चे-लो'(गुर्जर)तथा इसकी राजधानी 'पीलोमोलो' (भीनमाल) बताया है।*
- *कवि पम्प ने अपने ग्रंथ पम्पभारत' में कन्नौज शासक महीपाल को गुर्जर राजा बताया है।*
- *कैनेडी ने प्रतिहारों को ईरानी मूल का बताया है।*
- *उद्योतन सूरी ने अपने ग्रंथ 'कुवलयमाला' में गुर्जर शब्द का प्रयोग एक जाति विशेष के रूप में किया है।*
- *डॉ. भंडारकर ने प्रतिहारा को विदेशी गुर्जर जाति की संतान माना है।*

मण्डोर के प्रतिहार

- *मण्डोर के प्रतिहार गुर्जर प्रतिहारों की 26 शाखाओं में से सबसे महत्त्वपूर्ण एवं प्राचीन मण्डोर के प्रतिहार थे।*
- *मण्डोर के प्रतिहार स्वयं को 'हरिश्चन्द्र नामक ब्राह्मण' (रोहिलद्धि)का वंशज बताते हैं।*
- *हरिश्चन्द्र के दो पत्नियां थी- एक ब्राह्मणी और दूसरी क्षत्राणी भद्रा। उसकी ब्राह्मणी पत्नी से उत्पन्न संतान प्रतिहार ब्राह्मण तथा क्षत्राणी भद्रा से उत्पन्न संतान क्षत्रिय प्रतिहार कहलाये।*
- *हरिश्चन्द्र की रानी भद्रा से चार पुत्र- भोगभट्ट, कदक, रज्जिल और दद्द उत्पन्न हुए।*
- *इन चारों ने मिलकर मण्डोर को जीता तथा यहाँ गुर्जर प्रतिहार वंश की स्थापना की।*
- *मण्डोर के प्रतिहारों की वंशावली हरिश्चन्द्र के तीसरे पुत्र रज्जिल से प्रारंभ होती है।*

रज्जिल

- *हरिश्चन्द्र के चार पुत्रों में से रज्जिल मण्डोर का शासक बना।*

नागभट्ट प्रथम

- यह रज्जिल का पौत्र था।
- इसने मेड़ता को अपनी राजधानी बनाया।

शीलुक

- शीलुक ने वल्ल मण्डल के शासक भाटी देवराज को हराकर अपने राज्य की सीमा का वल्ल तक विस्तार किया।

कक्क

- यह शीलुक का पौत्र था।
- इसने मुंगेर के युद्ध में पाल वंश के शासक धर्मपाल को पराजित किया।
- इसके दो पुत्र थे- बाउक तथा कक्कुक।

बाउक

- बाउक एक प्रतापी शासक था जिसने अपने शत्रु नन्दवल्लभ को मारकर भूअकूप पर अधिकार कर लिया।
- इसका 837 ई. का 'मण्डोर (जोधपुर) का शिलालेख' प्राप्त हुआ है जिसमें बाउक ने अपने वंश का वर्णन अंकित करवाया।
- बाउक ने मयूर नामक राजा को पराजित किया था।

कक्कुक

- बाउक के बाद उसका भाई कक्कुक मण्डोर का शासक बना।
- घटियाला से प्राप्त दो शिलालेख कक्कुक के समय के हैं।
- इसने रोहिंसकूप (घटियाला) के निकट गावों में बाजार बनवाये तथा व्यापार में वृद्धि की।
- कक्कुक के द्वारा घटियाला तथा मण्डोर में जयस्तम्भ भी स्थापित करवाये गये।
- कालान्तर में मण्डोर के आस-पास के क्षेत्र पर चौहानों का अधिकार हो गया लेकिन मण्डोर प्रतिहारों की इन्दा शाखा के अधीन रहा।
- इन्दा प्रतिहारों ने राठौड़ चूँडा के साथ वैवाहिक संबंध स्थापित कर मण्डोर का क्षेत्र राठौड़ों को दहेज में दे दिया।
- इस घटना के साथ ही मण्डोर प्रतिहारों का राजनीतिकी इतिहास समाप्त हो गया।

भड़ौंच के गुर्जर प्रतिहार

दद्द प्रथम

- भड़ौंच के गुर्जर राज्य का संस्थापक हरिश्चन्द्र का पुत्र दद्द प्रथम था।
- इस शाखा के 629 ई. से 641 ई. के कुछ दानपत्र मिले हैं जिनसे यह सिद्ध होता है कि नान्दीपुर इन गुर्जर प्रतिहारों की राजधानी थी।
- दद्द प्रथम ने नागवंशियों तथा वनवासी राजा निरिहुलक के राज्य पर अधिकार किया था।

जयभट्ट प्रथम

- जयभट्ट प्रथम दद्द प्रथम का पुत्र था। इसकी उपाधि 'वीतराग' थी।
- जयभट्ट प्रथम हर्षवर्धन के समकालीन था।
- संखेड़ा दानपत्रों से उसकी विजयों के बारे में जानकारी प्राप्त होती है।
- उमेता, ललुआ तथा बेगुमरा शिलालेखों के अनुसार जयभट्ट प्रथम ने वल्मी की सेना को काठियावाड़ प्रान्त में पराजित किया था।
- इसने कलचुरियों को भी पराजित किया था।

दद्द द्वितीय

- जयभट्ट प्रथम के बाद उसका पुत्र दद्द द्वितीय शासक बना, जिसकी उपाधि 'महाराजा प्रशांतराग' थी।
- बड़ौदा के संखेड़ा नामक स्थान से दद्द द्वितीय के दानपत्र प्राप्त हुए हैं जिनकी भाषा संस्कृत तथा लिपि ब्राह्मी है।
- दद्द द्वितीय के समय हर्षवर्धन ने वल्लभी के शासक ध्रुवसेन द्वितीय को पराजित किया।
- इस समय ध्रुवसेन द्वितीय ने दद्द द्वितीय के दरबार में शरण ली, जिसके बाद दद्द द्वितीय ने हर्षवर्धन से उसका राज्य वापस दिला दिया।
- इसका राज्य विस्तार उत्तर में माही से दक्षिण में कीम तक तथा पूर्व में मालवा व खानदेश से पश्चिम में समुद्र तक था।

जयभट्ट द्वितीय

- दद्द द्वितीय के बाद उसका पुत्र जयभट्ट द्वितीय शासक बना।
- यह चालुक्यों का सामन्त था।

दद्द तृतीय

- यह जयभट्ट द्वितीय का पुत्र था, जिसने पंचमहाशब्द तथा बहुसहाय नामक उपाधियाँ धारण की।

- इसने वल्भी के शासक शीलादित्य द्वितीय को पराजित किया था।

जयभट्ट चतुर्थ

- यह इस वंश का अन्तिम शासक था।
- इसने अरब आक्रमणकारियों को पराजित किया था।
- इस शाखा के गुर्जर प्रतिहारों के लिए सामंत या महासामंत शब्दों का प्रयोग मिलता है, जिससे यह सिद्ध होता है कि इन शासकों की स्वतंत्र सत्ता नहीं थी।

राजोगढ़ के गुर्जर प्रतिहार

- अलवर के राजोगढ़ से 960 ई. का शिलालेख प्राप्त हुआ है, जिससे यह प्रमाणित होता है कि यहाँ पर प्रतिहार गोत्र का गुर्जर महाराजाधिराज सावट का पुत्र मथनदेव राज्य करता था।
- राजोगढ़ शिलालेख से बहलोल लोदी के समय तक बड़गूजरों का राजोगढ़ में निवास होना सिद्ध होता है।

भीनमाल के गुर्जर (चावड़ा वंश)

- भीनमाल का गुर्जर राज्य दक्षिण के चालुक्यों तथा हर्षवर्धन के समकालीन था।
- इस चावड़ा गुर्जर राज्य की राजधानी भीनमाल थी।
- 641 ई. में चीनी यात्री ह्वेनसांग ने भीनमाल की यात्रा की थी, इसने राज्य का नाम कु-चे-लो तथा इसकी राजधानी पीलोमोलो (भीनमाल) बताया।
- भीनमाल के संस्कृत विद्वान महाकवि माघ ने 'शिशुपाल वध' नामक ग्रंथ लिखा।
- माघ ने सुप्रभदेव को यहाँ का शासक बताया था।
- यहाँ के ज्योतिषी ब्रह्मगुप्त ने 628 ई. में 'ब्रहस्फुट सिद्धांत' की रचना की।
- ब्रह्मगुप्त ने गणित पर खंडखाद्यक नामक ग्रंथ भीनमाल में ही लिखा था।

नागभट्ट प्रथम (730 ई.-760 ई.)

- नागभट्ट प्रथम को 'नागवलोक' तथा इसके दरबार को नागवलोक दरबार कहा जाता था।
- नागभट्ट प्रथम को प्रतिहार साम्राज्य का संस्थापक कहा जाता है ।

ककुस्थ

- नागभट्ट प्रथम के बाद उसका भतीजा ककुस्थ शासक बना जिसे कक्कुक भी कहते हैं।
- इसके समय गुर्जर राज्य की सीमाएँ यथावत बनी रही।

देवराज

- ककुस्थ के बाद उसका भाई देवराज शासक बना।
- वराह अभिलेख में इसे देवशक्ति भी कहा गया है।
- यह वैष्णव धर्मावलम्बी था।

वत्सराज (783 ई. - 795 ई.)

- **वत्सराज** देवराज व भूयिका देवी का पुत्र था ।
- वत्सराज भीनमाल में गुर्जर प्रतिहारों का **वास्तविक संस्थापक** कहा जाता है ।
- वत्सराज ने कन्नौज के **त्रिपक्षीय संघर्ष** की **शुरुआत** की, जो 150 वर्ष तक चला ।
- 150 वर्ष का त्रिपक्षीय संघर्ष **कन्नौज** को लेकर हुआ
- यह संघर्ष 8वीं सदी में प्रारंभ हुआ ।
- उत्तर भारत के **गुर्जर प्रतिहार**, दक्षिण भारत के **राष्ट्रकूट वंश**, पूर्व में बंगाल के **पालवंश** के बीच त्रिपक्षीय संघर्ष हुआ । इस संघर्ष में गुर्जर प्रतिहार विजयी हुए । परन्तु वत्सराज राष्ट्रकूट **राजा ध्रुव** से हारा था ।
- कन्नौज को कुश स्थल व महोदय नगर के नाम से जाना जाता था । कन्नौज के त्रिपक्षीय संघर्ष की शुरुआत गुर्जर-प्रतिहार शासक वत्सराज के समय हुई ।
- सम्राट हर्षवर्धन की मृत्यु (647 ई.) के बाद उत्तरी भारत की राजनीति की धुरी कन्नौज पर अधिकार करने हेतु संघर्ष प्रारंभ हुआ ।

त्रिपक्षीय संघर्ष के परिणाम

- कन्नौज पर (725 ई.-752 ई.) यशोवर्धन नामक शासक की मृत्यु के बाद तीन महाशक्तियों में संघर्ष प्रारंभ हुआ जो त्रिपक्षीय संघर्ष कहलाता है । ये तीन शक्तियाँ
- उत्तरी भारत के गुर्जर प्रतिहार
- पूर्व के पाल (बंगाल के)
- दक्षिण भारत के राष्ट्रकूट
- त्रिपक्षीय संघर्ष के समय कन्नौज पर शक्तिहीन आयुधवंश (इन्द्रायुध, चक्रायुध) के शासकों का शासन था ।
- त्रिपक्षीय संघर्ष की शुरुआत आठवीं शताब्दी ईस्वी में हुई । त्रिपक्षीय संघर्ष का प्रारंभ प्रतिहार वंश ने किया और इसका अंत भी प्रतिहार वंश ने ही किया ।

महाराणा प्रताप सिंह (1572-1597 ईस्वी.)

जन्म - 9 मई, 1540

जन्म स्थान - कुम्भलगढ़ दुर्ग

पिता – राणा उदय सिंह

माता - महाराणी जयवंता बाई

विवाह - उन्होंने 11 शादियाँ की थी - महारानी अजब्धे पंवार, अमरबाई राठौड़, शहमति बाई हाडा, लखाबाई, जसोबाई चौहान और 6 पत्नियाँ

संतान - अमर सिंह, भगवान दास और 17 पुत्र

प्रारम्भिक जीवन और बचपन

- प्रताप का जन्म भारतीय तिथि के अनुसार ज्येष्ठ शुक्ल की तृतीय को हुआ था, इस कारण आज भी प्रतिवर्ष इस दिन महाराणा प्रताप का जन्म दिवस मनाया जाता है ।
- राणा उदय सिंह द्वितीय के 33 पुत्र थे, जिनमें प्रताप सिंह सबसे बड़े पुत्र थे, प्रताप बचपन से ही स्वाभिमानी और देशभक्त थे, साथ ही वो बहादुर और संवेदनशील भी थे। उन्हें खेलों और हथियार के प्रशिक्षण में रुचि थी। वास्तव में प्रताप को मेवाड़ के प्रति अपनी जिम्मेदारी की समझ बहुत जल्द आ गयी थी, इस कारण बहुत कम उम्र में ही उन्होंने हथियार, घुड़सवारी, युद्ध का प्रशिक्षण लेना शुरू कर दिया। वो सभी राजकुमारों में सबसे ज्यादा प्रतिभावान और बलशाली राजकुमार थे। महाराणा प्रताप जयमल मेडतिया के शिष्य थे, जो बहुत वीर था, जब **बहलोल खान** ने जयमल को युद्ध के लिए ललकारा तो उन्होंने खान के घोड़े के साथ उसके दो टुकड़े कर दिए।
- 1567 में चित्तौड़ को अकबर की मुगल सेना ने चित्तौड़ को सब तरफ से घेर लिया था, ऐसे में मुगलों के हाथों में पड़ने की जगह महाराणा उदयसिंह ने अपने परिवार के साथ गोगुन्दा जाने का निश्चय किया, हालांकि उस समय भी राजकुमार प्रताप वहीं रहकर युद्ध करना चाहते थे लेकिन प्रतिकूल परिस्थितियां होने के कारण उन्हें अपने परिवार के साथ गोगुन्दा जाना पड़ा। उदयसिंह और उनके मंत्रियों ने गोगुन्दा में ही अस्थायी शासन शुरू किया।

कुंवर प्रताप से महाराणा प्रताप

- उदयसिंह ने मरने से पहले अपनी सबसे छोटी रानी के **पुत्र जगमाल** को राजा नियुक्त किया और प्रताप ने सबसे बड़ा और योग्य पुत्र होते हुए भी ये स्वीकार कर लिया, लेकिन मंत्री इस बात से सहमत नहीं हुए क्योंकि जगमाल में राजा बनने के गुण नहीं थे। **1572 में उदयसिंह** की मृत्यु हो गयी। इसलिए सबने मिलकर ये निर्णय लिया कि सत्ता महाराणा प्रताप को दी जायेगी, महाराणा प्रताप सिंह ने भी उनकी इच्छा का सम्मान करते हुए, **1 मार्च 1572** को गद्दी संभाल ली, इस कारण जगमाल को क्रोध आ गया और वो अकबर की सेना में शामिल होने के लिए अजमेर के लिए रवाना हो गया और अकबर की मदद के बदले जहाजपुर की जागीर हासिल करना ही उसकी मंशा थी।

महाराणा प्रताप और अकबर

- महाराणा प्रताप के समय अकबर दिल्ली का शासक था, उसकी रणनीति थी कि वो हिन्दू राजाओं की शक्ति को अपने अधीन करके उन पर शासन करता था। इसी क्रम में युद्ध को नजरअंदाज करते हुए बहुत से राजपूतों ने युद्ध की जगह अपनी बेटियों के डोली अकबर के हरम में भेज दी, जिससे कि संधि हो सके, लेकिन मेवाड़ ऐसा राज्य नहीं था, यहाँ अकबर को काफी संघर्ष करना पड़ा। उदयसिंह के समय राजपूतों ने जब चित्तौड़ छोड़ दिया था तो मुगलों ने शहर पर कब्जा कर लिया हालांकि वो पूरे मेवाड़ को हासिल करने में नाकाम रहे, और अकबर पूरे हिन्दुस्तान पर शासन करना चाहता था इसलिए पूरा मेवाड़ उसका लक्ष्य था। केवल 1573 में ही अकबर ने 6 बार संधि वार्ता प्रस्ताव भेजे लेकिन प्रताप ने सबको अस्वीकार कर दिया, अकबर के पांच बार संधि वार्ता भेजने के बाद प्रताप ने अपने बेटे अमरसिंह को अकबर के दरबार में संधि अस्वीकार करने के लिए भेजा, इसके बाद सबसे अंतिम प्रस्ताव अकबर के बहनोई मानसिंह लेकर आये थे और अंतिम बार भी संधि प्रस्ताव के नहीं मानने से अकबर बेहद क्रोधित हुआ और उसने मेवाड़ पर हमला कर दिया।
- वैसे कहा जाता है कि अकबर ने राणा प्रताप से ये तक कहा था कि वो यदि अकबर से संधि कर ले तो अकबर प्रताप को आधा हिन्दुस्तान दे देगा

लेकिन महाराणा प्रताप ने किसी की भी अधीनता स्वीकार करने से मना कर दिया

हल्दीघाटी का युद्ध

- 1576 में अकबर ने राजपूत सेनापति मानसिंह प्रथम और आसफ खान को प्रताप पर आक्रमण करने के लिए भेजा, जबकि प्रताप ने ग्वालियर के राम शाह तंवर और उनके तीन पुत्र रावत कृष्णादासजी चुडावत, मानसिंह झाला और चन्द्रसेन जी राठौड़ और अफगान से **हाकिम खान सुर** के अलावा भील समुदाय के मुखिया **राव पूंजा** की मदद से एक छोटी सी सेना गठित की। मुग़ल सेना में जहाँ 80,000 सैनिक थे, वहीं राजपूत सेना मात्र 20,000 सैनिकों की थी। इस तरह उदयपुर से 40 किलोमीटर दूर हल्दीघाटी में युद्ध सम्मुख युद्ध शुरू हुआ। यह युद्ध **18 जून 1576** को 4 घंटे के लिए हुआ, मुग़ल सेना को प्रताप के भाई शक्ति सिंह ने गुप्त मार्ग बता दिया, जिससे मुगलों को आक्रमण की दिशा मिल गयी। मुग़ल सेना के घुड़सवारों का नेतृत्व **मानसिंह प्रथम** कर रहे थे, प्रताप ने मानसिंह का सामना खुद करने का निश्चय किया और अपना घोड़ा उनके सामने ले गए लेकिन चेतक और प्रताप दोनों मानसिंह के हाथी से घायल हो गए। इसके बाद मानसिंह झाला ने अपना कवच प्रताप से बदल लिया था जिससे कि मुग़ल सेना में भ्रम पैदा हो सके, और राणा प्रताप बचकर निकल सके। हल्दीघाटी के युद्ध के बाद अरावली के कुछ हिस्सों को छोडकर पुरा मेवाड़ मुगलों के हाथ में चला गया ।
- जुलाई 1576 में प्रताप ने गोगुन्दा को मुगलों से वापिस कब्जे में ले लिया और कुम्भलगढ़ को अपनी अस्थायी राजधानी बनाया, लेकिन अकबर ने खुद प्रताप पर चढ़ाई कर दी और गोगुन्दा, उदयपुर एवं कुम्भलगढ़ पर कब्जा कर लिया जिससे महाराणा वापिस पहाड़ों में लौटने को मजबूर हो गये।
- अगले कुछ वर्षों में कुम्भलगढ़ एवं चित्तौड़ ने अपनी खोयी हुई, सम्पति को वापिस कब्जे में ले लिया और साथ ही गोगुन्दा, रणथम्भौर और उदयपुर को भी छीन लिया। जब महाराणा प्रताप ने अकबर के सामने झुकने से मना कर दिया तब अकबर ने युद्ध की घोषणा कर दी। महाराणा ने अपनी राजधानी चित्तौड़ से हटाकर अरावली की पहाड़ियों में **कुम्भलगढ़** ले गए, जहां उन्होंने आदिवासियों और जनजातियों को सेना में शामिल करना शुरू किया। इन लोगों को युद्ध का कोई अनुभव नहीं था, महाराणा ने उन्हें प्रशिक्षण दिया, इस तरह उन्होंने समाज के दो वर्गों को एक उद्देश्य के लिए एक दिशा में लाने का प्रयास किया। 1579 के बाद अकबर की बंगाल, बिहार और पंजाब पर ध्यान होने के कारण मेवाड़ पर पकड़ ढीली होने लगी, इस परिस्थिति का फायदा उठाकर प्रताप ने दान **शिरोमणि भामाशाह** के दान किये धन से कुम्भलगढ़ और चित्तौड़ के आस-पास के क्षेत्र पर वापिस कब्जा कर लिया, उन्होंने **40,000** की सेना एकत्र करके गोगुन्दा, कुम्भलगढ़, रणथम्भौर और उदयपुर को भी मुगलों से मुक्त करवा लिया। 6 महीने बाद अकबर ने फिर से हमला किया लेकिन फिर से उसे मुंह की खानी पड़ी और आखिर में अकबर ने 1584 में जगन्नाथ को बड़ी सेना के साथ मेवाड़ भेजा लेकिन 2 वर्ष के संघर्ष के बाद भी वह राणा प्रताप को नहीं पकड़ सका।
- इस तरह हल्दीघाटी का युद्ध हो या इसके पश्चात् के छोटे-बड़े सम्मुख/गरिल्ला युद्ध दोनों पक्षों ने कभी हार नहीं स्वीकार की, और इन सब में राष्ट्र के लिए जो आज भी गौरव का विषय है वो राणा प्रताप का निरंतर संघर्ष और मेवाड़ को मुक्त करवाने की जिजीविषा है, जो उनकी मृत्यु तक उनके साथ थी।

दिवेर का युद्ध (अक्टूबर, 1582)

- महाराणा प्रताप ने मेवाड़ की भूमि को मुक्त कराने का अभियान दिवेर से प्रारंभ किया। दिवेर वर्तमान राजसमंद जिले में उदयपुर-अजमेर मार्ग पर स्थित है। दिवेर के शाही थाने का मुख्तार सम्राट अकबर का काका सुल्तान खान था। महाराणा प्रताप ने उस पर अक्टूबर 1582 में आक्रमण किया। मेवाड़ और मुग़ल सैनिकों के मध्य निर्णायक युद्ध हुआ। महाराणा सम्राट को यश और विजय प्राप्त हुई, दिवेर की जीत की ख्याति चारों ओर फैल गई।
- प्रताप के जीवन के बहुत बड़े विजय अभियान का यह शुभ और कीर्तिदायी शुभारम्भ था। दिवेर की जीत के बाद महाराणा प्रताप ने चावंड में अपना निवास स्थान बनाया। अकबर ने अब पुनः मेवाड़ की ओर ध्यान देना प्रारंभ किया। प्रताप अब भी परास्त नहीं हुआ है, यह भारत विजेता सम्राट कैसे सहन कर सकता है। अतः अकबर ने आमेर के राजा

भारमल के छोटे पुत्र जगन्नाथ कछवाहा के नेतृत्व मे 5 दिसंबर 1584 को एक विशाल सेना मेवाड़ के विरुद्ध रवाना की लेकिन जगन्नाथ को भी कोई सफलता नहीं मिली। वह भी प्रताप को नहीं पकड़ सका। यह अकबर का प्रताप के विरुद्ध अंतिम अभियान था।

- अब अकबर मेवाड़ मामले में इतना निराश हो चुका था कि छुटपुट कारवाई उसे निरर्थक लगी और बड़े अभियान के लिए वह अवकाश नहीं निकाल सका। 1586 से 1596 तक दस वर्ष की सुदीर्घ अवधि मे प्रताप को जहाँ का तहाँ छोड़ दिया गया। इसे अघोषित संधि कहा जा सकता है अथवा अपनी विवशता की अकबर द्वारा परोक्ष स्वीकृति, प्रताप ने 1585 में अपने स्थायी जीवन का आरम्भ चावंड मे मेवाड़ की नई राजधानी स्थापित करके किया।
- प्रताप के अंतिम बारह वर्ष और उनके उत्तराधिकारी महाराणा अमरसिंह के राजकाज के प्रारंभिक 16 वर्ष चावंड मे बीते। चावंड 28 साल मेवाड़ की राजधानी रहा। चावंड गांव से लगभग आधा मील दूर एक पहाड़ी पर प्रताप ने अपने महल बनवाए। 19 जनवरी 1597 को प्रताप का चावंड मे देहांत हुआ। चावंड से कुछ दूर बांडोली गांव के निकट महाराणा का अंतिम संस्कार हुआ। जहां उनकी छतरी बनी हुई है।

महाराणा प्रताप और चेतक

- प्रताप के विश्वसनीय घोड़े का नाम चेतक था, जो कि 11 फीट लम्बा था। चेतक पर नीले रंग का निशान था इसलिए राणा प्रताप को "नीले घोड़े रा असवार कहा जाता है, जिसका मतलब **"नीले घोड़ी की सवारी करने वाला"** होता है।
- हल्दीघाटी के युद्ध में मानसिंह के साथ युद्ध करते हुए महाराणा प्रताप और उनका घोड़ा घायल हो गया था, फिर भी **26 फीट चौड़ी** नदी पार करने में उसने अपने स्वामी का सहयोग किया था, लेकिन इसके बाद वो ज्यादा जीवित नहीं रह सका। चेतक ने अपनी जान देकर भी अपने स्वामी की जान बचाई थी, महाराणा चेतक की मृत्यु पर बालक की तरह रोये थे। चेतक की मृत्यु के बाद ही **शक्ति सिंह** को अपनी गलती का एहसास हुआ था और उसने **अपना** घोड़ा प्रताप को दे दिया।
- प्रताप चेतक को नहीं भूल सके, और बाद में उन्होंने उस जगह पर एक उद्यान बनवाया, जहां पर चेतक ने अंतिम सांस ली थी।

अमरसिंह प्रथम (1597-1620 ईस्वी)

- राणा अमरसिंह मेवाड़ राजस्थान के **सिसोदिया राजवंश** के शासक थे। इनके पिता महाराणा प्रताप थे तथा महाराणा उदयसिंह इनके दादा थे। राणा अमरसिंह भी महाराणा प्रताप जैसे वीर थे और इन्होंने मुग़लों से **18 बार** युद्ध लड़ा। जहांगीर ने मेवाड़ में प्रजा को मारना शुरु कर दिया था और बहुत सारे लोगों को बंदी भी बना दिया इस कारण राणा अमरसिंह को अपने अंतिम समय में जहांगीर से संधि करनी पड़ी थी। राणा अमरसिंह प्रजा भक्त थे। इनको गुलामी में रहना अच्छा नहीं लगा फिर इन्होंने अपना राज्य अपने पुत्र को देकर ख़ुद एक कुटिया में रहने लग गए।
- अमरसिंह प्रथम महाराणा प्रताप के पुत्र थे, जिनका राज्याभिषेक चावंड में हुआ।
- अमरसिंह प्रथम के पुत्र कर्णसिंह व सिसोदिया सरदारों के कहने पर अमरसिंह ने **5 फरवरी, 1615 ई.** में मुगलों के साथ संधि की तथा निम्न शर्ते रखी।
- मुग़ल-मेवाड़ वैवाहिक सम्बन्ध स्वीकार नहीं, मेवाड़ महाराणा मुग़ल दरबार में उपस्थित नहीं होगा।
- शाही सेना में महाराणा 1000 सवार रखेगा, महाराणा का ज्येष्ठ कुंवर शाही दरबार में उपस्थित होगा आदि।
- अमरसिंह प्रथम का देहांत 26 जनवरी, 1620 को हुआ तथा इनकी छतरी आहड़ (उदयपुर) में बनी हुई है।
- अमरसिंह मेवाड़ का पहला महाराणा था, जिसने मुगलों के साथ संधि की तथा जहाँगीर ने एकमात्र मेवाड़ राज्य के शासक को मुग़ल दरबार में उपस्थित होने की छूट दी।
- इस संधि के बारे में कथन कर्नल टॉड ने कहा कि - 'बादशाह ने मेवाड़ के राणा को आपस के समझौते से अधीन किया था, न कि बल से।'

कर्णसिंह (1620-1628)

- ये मेवाड़ के पहले शासक थे, जिन्हें मुग़ल दरबार में 1000 की मनसबदारी दी गई, महाराणा कर्णसिंह ने जगमंदिर महलों को बनवाना शुरू किया। जिसे उनके पुत्र महाराणा जगतसिंह ने पूर्ण किया। इसलिए यह महल **जगमंदिर एवं जगनिवास** कहलाते हैं।

कला संस्कृति

अध्याय – I

वास्तुकला की मुख्य विशेषताएँ -

- **किले और स्मारक (छतरियाँ)**

राजस्थान के प्रमुख किले (दुर्ग)

- राजा - महाराजाओं के रहने व उनका खजाना सुरक्षित रखने के लिए दुर्ग / गढ़ / किला का निर्माण किया जाता था जिसमें अनेक महीनों का राशन व पानी का भण्डारण होता था।
- दुर्ग में महल, शस्त्रगार, राजकीय आवास, सैनिक छावनियाँ , तालाब , कुण्ड छतरियाँ आदि होते थे।
- भारत में सर्वप्रथम दुर्ग के अवशेष सिन्धु घाटी सभ्यता से मिले हैं जिसमें नगर के दो भाग थे- (i) दुर्गीकृत (ii) अदुर्गीकृत दुर्ग
- भारत में सर्वाधिक दुर्ग महाराष्ट्र में जबकि राजस्थान का दुर्गों में तीसरा स्थान है।
- राजस्थान में सर्वाधिक दुर्ग जयपुर जिले में हैं ।
- दुर्गों का सर्वप्रथम वर्गीकरण मनुस्मृति में हुआ है। मनुस्मृति में छः प्रकार के दुर्ग बताये गये हैं इनमें गिरि दुर्ग सर्वश्रेष्ठ है।
- कौटिल्य के अर्थशास्त्र में राज्य के सप्तांग सिद्धांत में सबसे महत्वपूर्ण दुर्ग को बताया है।

- **शुक्र नीति के अनुसार 9 प्रकार के दुर्ग बताए गए जो निम्न हैं-**
- शुक्रनीति में सैन्य दुर्ग को सर्वश्रेष्ठ माना गया है।

(1.) एरन दुर्ग
- यह दुर्ग खाई, काँटों तथा कठोर पत्थरों से - निर्मित होता है।
- उदाहरण- रणथम्भौर दुर्ग, चित्तौड़ दुर्ग

(2.) धान्वन (मरुस्थल) दुर्ग
- ये दुर्ग चारों ओर रेत के ऊँचे टीलों से घिरे होते हैं।
- उदाहरण- जैसलमेर , बीकानेर व नागौर के दुर्ग ।

(3.) औदक दुर्ग (जलदुर्ग)
- ये दुर्ग चारों ओर पानी से घिरे होते हैं।
- उदाहरण- गागरोण का दुर्ग, भैंसरोड़गढ़ दुर्ग।

(4.) गिरि दुर्ग
- ये पर्वत एकांत में किसी पहाड़ी पर स्थित होता है तथा इसमे जल संचय का अच्छा प्रबंध होता है।
- उदाहरण- कुम्भलगढ़ , तारागढ़, जयगढ़, नाहरगढ़ (जयपुर), मेहरानगढ़ (जोधपुर)

(5.) सैन्य दुर्ग
- जो व्यूह रचना में चतुर वीरों से व्याप्त होने से अभेद्य हो।
- ये दुर्ग सर्वश्रेष्ठ समझे जाते हैं।

(6.) सहाय दुर्ग
- जिसमें वीर और सदा साथ देने वाले बंधुजन रहते हो।

(7.) वन दुर्ग
- जो चारों ओर वनों से ढका हुआ हो और कांटेदार वृक्ष हो।
- उदाहरण- सिवाना दुर्ग , त्रिभुवनगढ़ दुर्ग , रणथम्भौर दुर्ग।

(8.) पारिख दुर्ग
- वे दुर्ग जिनके चारों ओर बहुत बड़ी खाई हो।
- उदाहरण-लोहागढ़ दुर्ग , भरतपुर।

(9.) पारिध दुर्ग
- जिसके चारों ओर पत्थर तथा मिट्टी से बनी बड़ी - बड़ी दीवारों का सुदृढ़ परकोटा हो।
- उदाहरण-चित्तौड़गढ़ , कुम्भलगढ़ दुर्ग।
- ❖ राजस्थान का वह दुर्ग जिस पर सर्वाधिक विदेशी आक्रमण हुए -भटनेर (हनुमानगढ़)
- ❖ राजस्थान का वह दुर्ग जिस पर सर्वाधिक स्थानीय आक्रमण हुए-तारागढ़ (अजमेर)
- ❖ राजस्थान का सबसे बड़ा लिविंग फोर्ट- चित्तौड़ दुर्ग
- ❖ राजस्थान में सर्वाधिक बुर्जों वाला दुर्ग –सोनारगढ़ (जैसलमेर, कुल 99 बुर्ज)
- ❖ राजस्थान में अंग्रेजों द्वारा निर्मित दुर्ग -बोरासवाड़ा / टॉडगढ़ (अजमेर)
- ❖ राजस्थान का सबसे पुराना दुर्ग – भटनेर (हनुमानगढ़)
- ❖ राजस्थान का सबसे नवीन दुर्ग -मोहनगढ़ (जैसलमेर)

❖ वर्ष 2013 में यूनस्को की विश्व धरोहर सूची में राजस्थान के 6 दुर्ग शामिल किये - 1. चित्तौड़ 2. कुम्भलगढ़ (राजसमंद) 3. गागरोन (झालावाड़) 4. जैसलमेर 5. रणथम्भौर (सवाईमाधोपुर) 6. आमेर

❖ चितौड़गढ़ का किला

- **उपनाम-** चित्रकूट, राजस्थान का गौरव, दक्षिणी - पूर्वी द्वार, दुर्गों का दुर्ग, दुर्गों का सिरमौर, दुर्गों का तीर्थस्थल,
- इस किले का निर्माण चित्रांगद मौर्य ने किया था। (कुमारपाल प्रबन्ध के अनुसार)।
- राणा कुम्भा को इस दुर्ग का आधुनिक निर्माता माना जाता है।
- यह दुर्ग दिल्ली मालवा व गुजरात के रास्ते पर स्थित है जिसका सामरिक महत्त्व सर्वाधिक है।
- 734 ई. में बप्पा रावल ने मान मौर्य को हराकर चित्तौड़ के किले पर अधिकार कर लिया।
- 1559 ई. में उदयपुर की स्थापना तक चित्तौड़ मेवाड़ की राजधानी रहा है।
- अबुल फजल ने इस दुर्ग के बारे में कहा है " गढ़ तो चित्तौड़गढ़ बाकी सब गढैया। "
- इस दुर्ग को राजस्थान का दक्षिणी प्रवेश द्वार व मालवा का प्रदेश द्वारा कहते हैं।
- यह दुर्ग धान्वन दुर्ग को छोड़कर सभी श्रेणी में शामिल है।
- यह एकमात्र दुर्ग है जिसमें कृषि होती थी।
- यह दुर्ग गम्भीरी व बेड़च नदी के संगम पर स्थित राजस्थान का क्षेत्रफल में सबसे बड़ा दुर्ग है।
- यह राजस्थान का सबसे बड़ा आवासीय किला है।
- यह दुर्ग मेसा पठार पर स्थित है जिसकी आकृत्ति व्हेल मछली के समान है।
- इस दुर्ग में प्रतिवर्ष चैत्र कृष्ण एकादशी को जौहर मेले का आयोजन किया जाता है।
- इस दुर्ग में स्थित प्रमुख जल स्रोतों में घी - तेल बावड़ी,कातण बावड़ी, जयमल - फत्ता तालाब, गौमुख कुण्ड, हाथीकुण्ड, सूर्यकुण्ड, भीमतल कुण्ड,रामकुंड व चित्रांगद मौरी तालाब प्रमुख है।
- **इस दुर्ग में राजस्थान में सर्वाधिक 3 साके हुए जो निम्न हैं-**

  प्रथम साका वर्ष 1303 ई. में हुआ जब रत्नसिंह व अलाउद्दीन के मध्य युद्ध हुआ जिसमें रत्नसिंह ने केसरिया तथा उसकी रानी ने पद्मिनी ने जौहर किया।

  द्वितीय साका वर्ष 1534-35 ई. में हुआ जब विक्रमादित्य के सेनापति बाघसिंह रावत व गुजरात के शासक बहादुरशाह के मध्य युद्ध हुआ जिसमें सेनापति बाघसिंह रावत के नेतृत्व में केसरिया तथा राणा सांगा की रानी कर्मावती के नेतृत्व में जौहर हुआ।

  तृतीय साका वर्ष1567-68 ई. में हुआ जब दिल्ली के बादशाह अकबर व राणा उदयसिंह के सेनापति जयमल राठौड़ व फत्ता सिसोदिया के मध्य युद्ध हुआ जिसमें सेनापति जयमल – फत्ता के नेतृत्व में केसरिया तथा गुलाब कंवर व फूल कंवर के नेतृत्व में जौहर हुआ।

- **इस दुर्ग में सात प्रवेश द्वार हैं-**

  1. पाडन पोळ / पावटन पोळ - यहाँ देवलिया के रावत बाघसिंह की छत्री है।
  2. भैरों पोळ - यहाँ कल्ला राठौड़ की 4 खम्भों तथा, जयमल राठौड़ की 16 खम्भों की छतरी है।
  3. हनुमान पोळ
  4. लक्ष्मण पोळ
  5. जोड़न पोळ
  6. त्रिपोलिया पोळ
  7. रामपोळ - यहाँ फत्ता सिसोदिया का स्मारक बना हुआ है।

❖ दुर्ग में स्थित दर्शनीय प्रमुख स्थल

- **कुम्भा द्वारा निर्मित-** कुम्भा स्वामी का मंदिर, श्रृंगार चंवरी का मंदिर, विजय स्तम्भ, कीर्ति स्तम्भ, चार दीवार, सात द्वार
- मोकल ने समिद्धेश्वर मंदिर का पुनर्निर्माण करवाया।

- बनवीर ने नवलखा भण्डार/ महल (यहाँ पर स्वामिभक्त पन्नाधाय ने अपने पुत्र चंदन का बलिदान दिया) व तुलजा भवानी का मंदिर बनवाया।
- इस दुर्ग में जयमल, फत्ता , कल्ला राठौड़, रैदास , बाघसिंह की छतरियाँ हैं ।
- दुर्ग में पद्मिनी महल, गौरा - बादल महल, पुरोहितों की हवेली, फतेहमहल, भामाशाह की हवेली, सलूम्बर हवेली, रामपुरा हवेली, आहाड़ा हिंगलू का महल, रतनसिंह महल, आल्हा काबरा की हवेली, राव रणमल की हवेली प्रमुख हैं।

❖ विजय स्तम्भ

- यह चित्तौड़ दुर्ग में स्थित इमारत है।
- ऊँचाई-122 फीट
- चौड़ाई 30 फुट है
- 9 मंजिला जिसका
- निर्माण 1440-48 ई.
- इसमें 157 सीढ़ियाँ
- निर्माण में 90 लाख का खर्चा
- शिल्पी जैता,नाथा, पामा, पूंजा
- तीसरी मंजिल पर 9 बार अरबी भाषा में अल्लाह लिखा
- इसकी 8वीं मंजिल पर कोई मूर्ति नहीं

- **विजय स्तम्भ के उपनाम**

- **विक्ट्री टावर,**
- **रोम के टार्जन के समान -फर्ग्युसन**
- **कुतुबमीनार से श्रेष्ठ - कर्नल जेम्स टॉड**
- **हिन्दू प्रतिमा शास्त्र की अनुपम निधि - आर. पी. व्यास**
- **संगीत की भव्य चित्रशाला – डॉ. सीमा राठौड़**
- **लोकजीवन का रंगमंच - गोपीनाथ शर्मा**

- **विष्णु ध्वज - उपेन्द्रनाथ डे कीर्ति**
- इसका निर्माण राणा कुम्भा ने सारंगपुर विजय (1437 ई.) के उपलक्ष में करवाया।
- इसके चारों ओर मूर्तियाँ होने के कारण इसे मूर्तियों का अजायबघर कहते हैं।
- यह राजस्थान की प्रथम इमारत है जिस पर 15 अगस्त, 1949 को एक रुपये का डाक टिकट जारी किया गया।
- यह राजस्थान पुलिस व माध्यमिक शिक्षा बोर्ड का प्रतीक चिह्न है। विनायक दामोदर सावरकर द्वारा स्थापित वर्ष 1904 ई. 'अभिनव भारत' का प्रतीक चिह्न भी विजय स्तम्भ ही था।
- इसकी 9 वीं मंजिल पर अत्रि - महेश ने मेवाड़ी भाषा में कीर्ति स्तम्भ प्रशस्ति की रचना की। जिसमें राणा कुम्भा की विजयों का वर्णन है।

❖ कीर्ति स्तम्भ

- इसका निर्माण 11-12वीं सदी में जैन व्यापारी जीजा ने करवाया।
- इसकी ऊँचाई 75 फीट तथा 7 मंजिला हैं।
- यह इमारत जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ / ऋषभदेव को समर्पित है।

❖ गागरोण का किला

- वर्तमान झालावाड़ जिले में काली सिंध एवं आहू नदियों के किनारे मुकन्दरा पहाड़ी पर सामेल नामक स्थान पर स्थित है।
- गागरोण का किला एक जलदुर्ग है।
- इसका निर्माण 12वीं सदी में डोड राजा विजलदेव परमार ने करवाया।
- इसे ' डोडगढ़ ' एवं 'धूलरगढ़' भी कहते हैं

- देवेन सिंह खिंची ने वीजलदेव को हराकर इस पर अधिकार कर लिया था।
- यह दुर्ग बिना नींव के है।
- यहाँ सन्त पीपा की जन्मस्थली व छतरी है।
- यहाँ मीठेशाह की दरगाह (औरंगजेब ने निर्माण), दीवान- ए-आम, दीवान-ए-खास, जनाना महल, अचलदास का महल, रंग महल व औरंगजेब द्वारा निर्मित बुलन्द दरवाजा स्थित है ।
- प्रवेश द्वार- सूरजपोल , भैरवपोल , गणेशपोल
- यहाँ की टकसाल में सालिमशाही रुपया बनता था।

जैत्रसिंह

- 1303 में जैत्रसिंह के समय अलाउद्दीन ने आक्रमण किया था।
- संत हमीदुद्दीन चिश्ती जैत्रसिंह के समय गागरोण आए थे, जिन्हें हम 'मीठे साहेब' के नाम से जानते हैं। इनकी दरगाह गागरोण के किले में बनी हुई है।

प्रताप सिंह

- संत पीपा के नाम से जानते हैं।
- इनके समय में फिरोज तुगलक ने गागरोण पर विफल आक्रमण किया था।
- संत पीपा की छत्तरी गागरोण में बनी हुई है।

अचलदास

- 1423 ई. में मालवा का सुल्तान होशंगशाह गागरोण पर आक्रमण करता है।
- इस समय गागरौण के किले का पहला साका होता है।
- अचलदास खिंची अपने साथियों के साथ लड़ता हुआ मारा जाता है।
- लीला मेवाड़ी (कुम्भा की बहिन) व उमा सांखला (जांगलू) के नेतृत्व में जौहर किया जाता है।
- शिवदास गाड़ण ने 'अचलदास खिंचीरी वचनिका' नामक ग्रंथ अनुसार इस दुर्ग में दो साके हुए है।

पाल्हण सिंह (अचलदास का पुत्र, कुम्भा का भांजा)

- 1444 ई. में मालवा का सुल्तान महमूद खिलजी गागरोण पर आक्रमण करता है।
- कुम्भा अपने सेनानायक धीरज देव को भेजकर पाल्हण सिंह की सहायता करता है।
- इस समय गागरौण के किले का दुसरा साका होता है।
- महमूद खिलजी ने गागरौण का नाम मुस्तफाबाद रख दिया था। (महासिरे मुहम्मदशाही में इसका जिक्र है)।
- बाद में गागरोण का किला महाराणा सांगा (मेवाड़) के अधिकार में आ गया था।
- सांगा ने अपने मित्र मेदिनी राय (चन्देरी) को यह किला दे दिया।
- 1567-68 ई. के चित्तौड़ आक्रमण के समय अकबर इसके किले में ठहरता है और फैजी इससे मुलाकात करता है।
- बाद में अकबर ने यह किला पृथ्वीराज राठौड़ को दे दिया। पृथ्वीराज राठौड़ ने इसी किले में 'बेलिक्रिसण रुक्मिणी' की रचना की।
- शाहजहाँ ने यह किला कोटा महाराजा माधोसिंह को दे दिया था। कोटा महाराजा दुर्जनसाल ने यहाँ मधुसूदन का मंदिर बनाया।
- जालिमसिंह झाला ने यहाँ जालिम कोट (परकोटा) का निर्माण करवाया।
- इस किले में एक जौहर कुण्ड है, अंधेरी बावड़ी, गीध कढ़ाई (यहाँ राजनैतिक ऊँची पहाड़ी पर बंदियों को सजा दी जाती थी) है।
- गागरोण का किला बिना नींव के (चट्टानों पर) खड़ा है।

❖ ***कुम्भलगढ़ का किला***

- इस दुर्ग का प्रारम्भिक निर्माण अशोक मौर्य के पुत्र सम्प्रति मौर्य ने जरगा पहाड़ियों में मच्छेद्रपुर के नाम से करवाया।
- नागौर विजय के उपलक्ष में इसका निर्माण 1448-58 ई. राणा कुम्भा ने अपनी प्रिय रानी कुम्भलदेवी के सम्मान में करवाया ।

- मानसिंह ने हल्दी घाटी युद्ध की तैयारी इसी दुर्ग में की थी।
- राणा कुंभा ने इस दुर्ग का पुनर्निर्माण करवाया।
- 1567 में चित्तौड़गढ़ से पूर्व अकबर ने माण्डलगढ़ पर अधिकार किया।
- राणा राजसिंह ने मुगलों से माण्डलगढ़ छीन लिया ।
- माण्डलगढ़ में जगन्नाथ कच्छवाहा की 32 खम्भों की छतरी बनी हुई है।

❖ **अचलगढ़**

- इस किले का निर्माण परमार शासकों ने करवाया था।
- महाराणा कुंभा ने इसका पुनर्निर्माण करवाया एवं कुंभा स्वामी का मंदिर बनवाया।
- यहाँ अचलेश्वर स्वामी का मंदिर है, इसमें शिव जी के पैर के अंगूठे की पूजा की जाती है। इस मंदिर के सामने 'दूरसा आढा की मूर्ति लगी हुयी है।
- अचलगढ़ को 'भँवराथल' कहते हैं, क्योंकि महमूद बेगड़ा के आक्रमण के समय यहाँ पर मधुमक्खियों ने उसकी सेना पर आक्रमण कर दिया था।

❖ **कोटा का किला**

- जैत्रसिंह (बूंदी का राजा) ने यहाँ एक 'गुलाब महल' का निर्माण करवाया था।
- कालान्तर में माधोसिंह ने इसे कोटा के किले के रूप में विकसित किया।
- जेम्स टॉड के अनुसार इस किले का परकोटा आगरा के किले के बाद सबसे बड़ा है।

❖ **कांकणबाड़ी का किला**

- अलवर जिले में स्थित, मिर्जा राजा जयसिंह ने इस किले का निर्माण करवाया था।
- औरंगजेब के द्वारा शिकोह (बड़े भाई) को यहाँ बंधक बना कर रखा था।

❖ **शाहबाद का किला**

- बारां जिले में स्थित मुकुटमणि देव चौहान ने इसका निर्माण करवाया था।
- शेरशाह सूरी अपने कालिंजर अभियान के दौरान इस पर अधिकार कर इसका नाम 'सलीमाबाद' कर दिया।
- इसमें 'बादल महल' बना हुआ है।
- इसमें नवलवान तोप भी रखी हुयी है।

❖ **दौंसा का किला**

- देवगिरी पहाड़ी पर बना हुआ है।
- छाजले की आकृति का बना हुआ है।
- दौंसा कच्छवाहों की पहली राजधानी थी।

❖ **माधोराजपुरा का किला :**

- जयपुर जिले में स्थित है। (फागी तहसील के पास)
- जयपुर महाराजा सवाई माधोसिंह प्रथम ने मराठों पर जीत के उपलक्ष में बनवाया था।
- यह किला कच्छवाहों की नरूका शाखा के अधीन रहा था।
- यहाँ अमीर खां पिण्डारी की बेगमों को बंधक बना कर रखा ।

❖ **फतेहपुर का किला**

- सीकर जिले में स्थित है।
- 1453 ई. में फतेहपुर में नवाब फतेह खाँ कायमखानी ने निर्माण करवाया था।
- पीर निजामुद्दीन की दरगाह बनी हुई है।
- बीकानेर के राजा लूणकरण ने यहाँ आक्रमण किया था।

❖ **नीमराणा का किला**

- अलवर जिले में स्थित है। इसे पंचमहल भी कहते हैं।
- इसका निर्माण 1464 ई. में चौहान शासकों द्वारा करवाया था।

❖ **कुचामन का किला**

- नागौर जिले में स्थित है।
- इसका निर्माण मेड़तिया शासक जालिम सिंह ने करवाया था।
- इसे 'जागीरी किलो का सिरमौर' भी कहते हैं।

❖ **नागौर का किला**

- इस दुर्ग का निर्माण सोमेश्वर चौहान के सामन्त कदम्बवास ने 1154 ई. में करवाया।
- इस दुर्ग को नागदुर्ग, नागाणा, अहिच्छत्रपुर भी कहते हैं।
- बख्त सिंह ने इस दुर्ग में सर्वाधिक निर्माण करवाया तथा अपने पिता की हत्या कर यहीं पर शरण ली थी।

- इस दुर्ग की प्रमुख विशेषता यह है की बाहर से चलाए गए गोले दुर्ग के ऊपर से सीधे निकल जाते हैं।
- इस दुर्ग में स्थित प्रमुख दर्शनीय स्थलों में शीश महल, बादलमहल, अकबर द्वारा निर्मित शुक्रतालाब, अभयसिंह के महल, बख्तसिंह के महल, अमरसिंह की छतरी (16 खम्भे), बंशीवाला का मन्दिर, अतारकीन का दरवाजा (निर्माण - इल्तुतमिश)
  हमीमुद्दीन नागोरी की दरगाह , अकबरी मस्जिद आदि हैं ।
- वर्ष 2007 में साफ-सफाई के कारण यूनेस्को ने इस दुर्ग को अवार्ड ऑफ एक्सीलेंस दिया।

❖ **भैंसरोड़गढ़ का किला**
- चित्तौड़गढ़ जिले में स्थित है।
- एक व्यापारी द्वारा निर्मित।
- चम्बल एवं बामनी नदियों के संगम पर
- इसे 'राजस्थान का वेल्लोर' कहते हैं। (जलदुर्ग)

❖ **मालकोट का किला**
- मेड़ता (नागौर)
- निर्माण राव मालदेव राठौड़

❖ **मोहनगढ़ का किला**
- जैसलमेर जिले में स्थित है।
- निर्माण जैसलमेर महाराजा जवाहर सिंह के समय।
- भारत का अंतिम किला है।

❖ **तिमनगढ़ का किला**
- यह दुर्ग बयाना करौली में स्थित है।
- यह दुर्ग त्रिभुवनगिरी पहाड़ी पर स्थित है।
- इस दुर्ग को इस्लामाबाद के नाम से भी जाना जाता है ।
- इस दुर्ग का निर्माण 11वीं सदी में तवनपाल ने करवाया।
- दुर्ग में नजद भोजाई का कुआँ स्थित है।

राजस्थान के प्रमुख दुर्ग

1. कौन सा दुर्ग अरावली पर्वतमाला में स्थित है?
A. सुजानगढ़
B. अचलगढ़
C. सोनारगढ़
D. लोहागढ़ **(B)**

2. राजस्थान में सर्वाधिक दुर्ग किस जिले में स्थित है ?
A. जैसलमेर
B. बीकानेर
C. भीलवाड़ा
D. जयपुर **(D)**

3. प्रसिद्ध लोहागढ़ दुर्ग किस जिले में है?
A. चूरू
B. अलवर
C. भरतपुर
D. बीकानेर **(C)**

4. एक खंभा महल के नाम से प्रसिद्ध प्रहरी मीनार का निर्माण किसने करवाया?
A. महाराजा अजीत सिंह
B. महाराजा जसवंत सिंह
C. राव मालदेव
D. महाराणा कुंभा **(A)**

5. कुंभा द्वारा निर्मित विजय स्तंभ कितने मंजिलों का है?
A. 5
B. 7
C. 9
D. 11 **(C)**

6. अबुल फजल ने किस दुर्ग के विषय में कहा कि यह दुर्ग इतना ऊँचा है कि नीचे से ऊपर देखने पर सिर की पगड़ी गिर जाती है?
A. तारागढ़ दुर्ग
B. मेहरानगढ़ दुर्ग
C. कुंभलगढ़ दुर्ग
D. गागरोण दुर्ग **(C)**

7. किस दुर्ग को राजस्थान का वैल्लोर कहा जाता है ?
A. कुंभलगढ़
B. भैंसरोडगढ़
C. बागा किला
D. गढ़ बिठली दुर्ग **(B)**

अध्याय – 7

मेले एवं त्यौहार

राजस्थान के प्रमुख मेले

अजमेर के मेले

- **पुष्कर मेला** - यह मेला पुष्कर (अजमेर) में कार्तिक शुक्ल एकादशी से पूर्णिमा तक भरता है। यह राजस्थान का सबसे बड़ा सांस्कृतिक मेला/ सबसे बड़ा रंगीन/रंग बिरंगा / सर्वाधिक विदेशी पर्यटकों का आगमन वाला मेला है। ख्वाजा साहब का उर्स - यह उर्स अजमेर में रज्जब माह की । से 6 तारीख तक भरता है। अढ़ाई दिन के झोपड़े में ।
- **कल्पवृक्ष मेला** - यह मेला मांगलियावास (अजमेर) में श्रावण मास की हरयाली अमावस्या को भरता है।
- **कार्तिक पशु मेला** - यह पशु मेला पुष्कर (अजमेर) में कार्तिक शुक्ल 8 से मार्गशीर्ष 2 तक भरता है।

अलवर के मेले

- **चंद्र प्रभु मेला** - यह मेला तिजारा, अलवर में फाल्गुन शुक्ला सप्तमी व श्रावण शुक्ला दशमी को भरता है।
- **नारायणी माता का मेला** - यह मेला बरवा डूंगरी सरिस्का (अलवर) में वैशाख शुक्ल एकादशी को भरता है।

हनुमानजी का मेला - यह मेला पांडुपोल (अलवर) में भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी एवं पंचमी को भरता है।

- **भृर्तहरि मेला** - यह मेला भृर्तहरि (महान योगी भृर्तहरि की तपो भूमि) पर अलवर में भाद्रपद शुक्ला अष्टमी को भरता है। यह कनफटे नाथों की तीर्थस्थली है ।
- **बिलारी माता मेला** - बिलारी माता का यह मेला बिलारी (अलवर) में चैत्र शुक्ला अष्टमी को भरता है।

बाड़मेर के मेले

- **रणछोड़राय का मेला** - यह मेला बाड़मेर जिले के खेड़ क्षेत्र में प्रतिवर्ष राधाष्टमी, माघ पूर्णिमा, बैशाख एवं श्रावण मास की पूर्णिमा व कार्तिक पूर्णिमा भादवा सुदी चतुर्दशी को भरता है।
- **मल्लीनाथ पशु मेला** - यह मेला बाड़मेर जिले के तिलवाड़ा क्षेत्र में चैत्र कृष्णा एकादशी से चैत्र शुक्ला एकादशी तक भरता है।
- **हल्देश्वर महादेव शिवरात्रि मेला** - यह मेला बाड़मेर जिले के पीपलूद (छप्पन की पहाड़ियों के बीच यह मारवाड़ का लघु माउन्ट आबू है।) में शिवरात्रि के अवसर पर भरता है।
- **रानी भटियाणी का मेला** - यह मेला बाड़मेर जिले के जसोल क्षेत्र में कार्तिक वदी पंचमी को भरता है।
- **नाकोड़ाजी का मेला** - यह मेला बाड़मेर जिले के नाकोड़ा तीर्थ मेवानगर में पोष कृष्ण दशमी को भरता है।
- **बजरंग पशु मेला** - यह मेला बाड़मेर जिले के सिणधरी क्षेत्र में मंगसर वदी तृतीया को भरता है।

बीकानेर जिले के मेले

- **निर्जला ग्यारस मेला** - यह मेला बीकानेर जिले के लक्ष्मीनाथ मंदिर में ज्येष्ठ सुदी एकादशी को भरता है।
- **जम्भेश्वर मेला** - यह मेला बीकानेर जिले के मुकाम-तालवा (नोखा) में वर्ष में दो बार - फाल्गुन व आश्विन अमावस्या को भरता है।
- **नागणेची माता का मेला** - यह मेला बीकानेर जिले में नवरात्रा के अवसर पर भरता है।
- **चनणी चेरी मेला (सेवकों का मेला)** - यह मेला बीकानेर जिले के देशनोक में फाल्गुन शुक्ल सप्तमी को भरता है।
- **कपिल मुनि का मेला** - यह मेला बीकानेर जिले के श्री कोलायत जी में कार्तिक पूर्णिमा को भरता है।
- **करणी माता का मेला** - यह मेला देशनोक (बीकानेर) में नवरात्रा (कार्तिक एवं चैत्र माह में) में भरता है।

बांसवाड़ा जिले के प्रमुख मेले

- **घोटिया अम्बा मेला** - यह मेला बांसवाड़ा जिले के घोटिया (बारीगामा) नामक स्थान पर चैत्र अमावस्या को (जिले का सबसे बड़ा ग्रामीण मेला) भरता है।
- **कल्लाजी का मेला** - यह मेला बांसवाड़ा जिले के गोपीनाथ का गढ़ा नामक स्थान पर आश्विन सुदी नवरात्रि प्रथम रविवार को भरता है।
- **अंदेश्वर मेला** - यह मेला बांसवाड़ा जिले के अंदेश्वर में कार्तिक पूर्णिमा को भरता है।
- **गोपेश्वर मेला** - यह मेला बांसवाड़ा जिले के घाटोल के निकट कार्तिक पूर्णिमा को भरता है।

- ***मानगढ़ धाम मेला (आदिवासियों का मेला)*** - *यह मेला बांसवाड़ा के आनंदपुरी के निकट मानगढ़ धाम में मार्गशीर्ष पूर्णिमा को भरता है।*

चूरू जिले के मेले

- ***भभूता सिद्ध का मेला*** - *यह मेला चूरू जिले के चंगोई (तारानगर) में भादवा सुदी सप्तमी को भरता है।*
- ***गोगा जी का मेला*** - *यह मेला चूरू जिले के ददरेवा गांव में भाद्रपद कृष्णा नवमी (गोगानवमी) को भरता है।*
- ***सालासर बालाजी का मेला*** - *यह मेला चूरू जिले के सालासर (सुजानगढ़) में चैत्र व कार्तिक पूर्णिमा को भरता है।*

बारां जिले के मेले

- ***सीताबाड़ी का मेला (धार्मिक व पशु मेला)*** - *यह मेला बारां जिले के सीताबाड़ी, केलवाड़ा (सहरिया जनजाति का कुम्भ) नामक स्थान पर ज्येष्ठ अमावस्या (इस मेले में सहरियाओं का स्वयंवर होता है) को भरता है।*
- ***डोल मेला*** - *यह मेला बारां जिले के डोल तालाब पर जलझूलनी एकादशी (भाद्रपद शुक्ला एकादशी) को भरता है। इसमें देवविमानों सहित शोभायात्रा निकलती है।*
- ***ब्रह्माणी माता का मेला*** - *यह मेला बारां जिले के सोरसन में भरता है। यहां पर गधों का मेला भी लगता है।*
- ***फूलडोल शोभा यात्रा महोत्सव (श्रीजी का मेला)*** - *यह मेला बारां जिले के किशनगंज में होली (फाल्गुन मास की पूर्णिमा) के दिन भरता है।*
- ***कपिल धारा का मेला*** - *यह मेला सहरिया क्षेत्र (बारां) में कार्तिक पूर्णिमा को भरता है।*

भरतपुर के मेले

- ***गंगा दशहरा मेला*** - *यह मेला भरतपुर जिले के कामां क्षेत्र में ज्येष्ठ शुक्ल सप्तमी से द्वारदशी तक भरता है।*
- ***बसंती पशु मेला*** – *यह मेला माघ अमावस्या से शुक्ल पंचमी तक भरता है ।*
- ***गरुड़ मेला*** - *यह मेला भरतपुर जिले के बंशी पहाड़पुर में कार्तिक शुक्ल तृतीया को भरता है।*
- ***भोजन बारी/भोजन थाली परिक्रमा*** – *भाद्रपद शुक्ल पूर्णिमा को कामा में भरता है ।*
- ***जसवंत पशु मेला*** - *यह मेला भरतपुर जिले में अश्विन शुक्ल पंचमी से पूर्णिमा तक भरता है।*
- ***बृज महोत्सव*** – *यह मेला द्वादशी से माघ शुक्ल – डीग भरतपुर में भरता है ।*

जयपुर के मेले

- ***गणगौर मेला*** - *गणगौर मेला जयपुर में चैत्र शुक्ला तीज व चौथ को भरता है।*
- ***बाणगंगा मेला*** - *यह विराटनगर, जयपुर में वैशाख पूर्णिमा को भरता है।*
- ***शीतलामाता का मेला*** - *यह मेला चाकसू, जयपुर में चैत्र कृष्ण अष्टमी को भरता है।*
- ***गधों का मेला*** - *आश्विन कृष्ण सप्तमी से आश्विन कृष्ण एकदशी तक लुनियावास (सांगानेर) गांव में भरता है।*
- ***तीज की सवारी एवं मेला*** - *यह जयपुर में श्रावण शुक्ला तृतीया को आयोजित होता है।*

भीलवाड़ा के मेले

- ***सवाई भोज का मेला*** - *यह मेला भीलवाड़ा जिले के आसींद में सवाई भोज स्थान पर भाद्रपद शुक्ल अष्टमी को भरता है।*
- ***फूलडोल का मेला (रामस्नेही सम्प्रदाय)*** - *यह मेला भीलवाड़ा जिले के रामनिवास धाम (रामद्वारा) में चैत्र कृष्णा प्रतिपदा से पंचमी तक भरता है।*
- ***तिलस्वां महादेव मेला*** - *यह मेला भीलवाड़ा जिले के तिलस्वां (मांडलगढ़) में शिवरात्रि फाल्गुन कृष्ण त्रयोदशी के अवसर पर भरता है।*
- ***सौरत (त्रिवेणी) का मेला*** - *यह मेला भीलवाड़ा जिले के त्रिवेणी संगम सौरत(मेनाल, मांडलगढ़) में शिवरात्रि के पर्व पर आयोजित होता है।*
- ***धनोप माता का मेला*** - *यह मेला भीलवाड़ा जिले के धनोप गांव (खारी व मानसी नदी के बीच स्थित) में चैत्र शुक्ल एकम से दशमी तक भरता है।*

जोधपुर के मेले

- ***नाग पंचमी का मेला*** - *यह मेला मंडोर (जोधपुर) में भाद्रपद शुक्ल पंचमी को भरता है।*
- ***धींगागवर बेतमार मेला*** - *यह मेला जोधपुर में वैशाख कृष्ण तृतीया को भरता है।*

- ***बाबा रघुनाथपुरी पशु मेला*** - *यह मेला भी सेवड़िया पशु मेले के समय सांचौर में आयोजित होता हैं। इस मेले में भी पशुओं के क्रय-विक्रय के साथ-साथ विभिन्न प्रकार के सांस्कृतिक कार्यक्रम, आकर्षक प्रदर्शनी तथा फिल्म प्रदर्शन का भी आयोजन किया जाता हैं।*

<u>प्रतापगढ़ जिले के मेले</u>

- ***भंवर माता का मेला*** - *यह मेला प्रतापगढ़ जिले की छोटी सादड़ी तहसील में प्रतिवर्ष चैत्र और आश्विन के नवरात्रों में भरता हैं।*
- ***सीता माता का मेला*** - *तीर्थ स्थल सीतामाता में यह मेला प्रतिवर्ष जेष्ठ अमावस्या को लगता हैं। भगवान राम के पुत्र लव कुश का जन्म यहीं पर हुआ था। यहां पर लव कुश कुंड एवं बाल्मीकि आश्रम भी स्थित हैं।*
- ***गौतमेश्वर महादेव का मेला*** - *यह मेला प्रतापगढ़ की अरनोद तहसील में प्रतिवर्ष वैशाख पूर्णिमा से 2 दिन तक लगता हैं। यहां गौतम ऋषि का स्थान था। गौतमेश्वर आदिवासी भीलों के आराध्य देव हैं।*
- ***दीपनाथ महादेव का मेला*** - *दीप नाथ महादेव के मंदिर का निर्माण महारावत सामंतसिंह के कुंवर दीपसिंह ने करवाया था। इस मंदिर में प्रतिवर्ष कार्तिक पूर्णिमा को मेला लगता हैं।*

<u>हिंदुओं के प्रमुख त्यौहार</u>

➢ ***हिन्दू कैलेंडर के अनुसार देशी महीने***

1. ***चैत्र*** *–मार्च-अप्रेल*
2. ***वैशाख*** *–अप्रेल -मई*
3. ***ज्येष्ठ*** *–मई-जून*
4. ***आषाढ़*** *–जून-जुलाई*
5. ***श्रावण****-जुलाई- अगस्त*
6. ***भाद्रपद****-अगस्त -सितम्बर*
7. ***अश्विन****-सितम्बर- अक्टूबर*
8. ***कार्तिक*** *– अक्टूबर –नवम्बर*
9. ***मार्गशीर्ष*** *–नवम्बर – दिसम्बर*
10. ***पौष*** *–दिसम्बर- जनवरी*
11. ***माघ*** *–जनवरी-फरवरी*
12. ***फाल्गुन*** *–फरवरी –मार्च*

- ***हिंदुओं के प्रमुख त्यौहार***

➢ *राजस्थान में त्योहारों से सम्बन्धित एक कहावत प्रचलित हैं- "तीज त्यौहार ले बावड़ी ले डूबी गणगौर।" अर्थात तीज के साथ त्योहारों की शुरुआत हो जाती हैं और गणगौर के साथ समापन हो जाता हैं।*

➢ ***गणगौर***

- *इस त्यौहार में सुहागन स्त्रियाँ शिव-पार्वती की पूजा करती हैं।*
- *गणगौर में 'गण' महादेव का व गौरी पार्वती का प्रतीक हैं।*
- *इस दिन कुँवारी कन्याएँ मनपसंद वर प्राप्ति की तथा विवाहित स्त्रियाँ अपने अखंड सौभाग्य की कामना करती हैं।*
- *गणगौर का त्यौहार पार्वती के "गौने" का सूचक हैं।*
- *गणगौर का त्यौहार लगभग 18 दिन तक (चैत्र कृष्ण एकम से शुरू होकर चैत्र शुक्ल तृतीया) चलता हैं।*
- *इन दिनों सर्वाधिक घूमर नृत्य किया जाता हैं।*
- *जयपुर की गणगौर प्रसिद्ध हैं।*
- *धींगा गणगौर एवं बेंतमार मेला जोधपुर में लगता हैं।*
- *उदयपुर के महाराणा राजसिंह प्रथम ने अपनी छोटी महारानी को प्रसन्न करने के लिए रीति के विरुद्ध जबरदस्ती वैशाख कृष्ण तृतीया को गणगौर मनाने का प्रचलन प्रारंभ किया था जिससे इसका नाम धींगा गणगौर प्रसिद्ध हुआ।*
- *बिना ईसर की गणगौर जैसलमेर में पूजी जाती हैं।*
- *राजस्थान में नाथद्वारा क्षेत्र में चैत्र शुक्ल पंचमी को गुलाबी गणगौर मनाई जाती हैं ।*

➢ ***शीतला अष्टमी***

- यह त्यौहार चैत्र कृष्ण अष्टमी को मनाया जाता है।
- इस दिन शीतला माता को ठंडा भोग चढ़ाया जाता है एवं शीतला माता की पूजा की जाती है और व्रत भी रखा जाता है।
- समस्त भोजन सप्तमी की संध्या को बनाकर रखा जाता है।
- इस दिन बासी खाना खाया जाता है जिससे इसे 'बास्योड़ा' कहा जाता है ।
- बच्चो के चेचक निकलने पर शीतला माता की पूजा की जाता है।
- इसलिए शीतला माता को बच्चों की सरंक्षिका भी कहा जाता है।
- शीतला माता का मंदिर चाकसू-जयपुर में है ।
- मंदिर का निर्माण माधोसिंह द्वितीय द्वारा करवाया गया।
- शीतला माता का वाहन गधा होता है , माता के पुजारी कुम्हार जाती के लोग होते है।

➢ **घुड़ला का त्यौहार**

- यह त्यौहार जोधपुर, बाड़मेर, जैसलमेर आदि जिलो में चैत्र कृष्ण अष्टमी से शुरू होकर चैत्र शुक्ल तृतीया तक चलता है।

घुड़ला त्यौहार का आरम्भ

कोसाणा गांव में लगभग 200 कुंवारी कन्याएँ गणगौर पर्व की पूजा कर रही थी । घुडला खान मुसलमान सरदार अपनी फ़ौज के साथ निकल रहा था, उसने सभी बच्चियों का अपहरण कर लिया, इसकी सूचना गाँव के कुछ घुड़सवारों ने जोधपुर के राव सातल सिंह राठौड़ जी को दी। राजपुतो की तलवारों ने भागती मुग़ल सेना का पीछा कर ख़ात्मा कर दिया । राव सातल सिंह जी ने तलवार के भरपुर वार से एक ही झटके में दुष्ट घुडला खान का सिर धड़ से अलग कर दिया। राव सातल सिंह ने सभी बच्चियों को मुक्त करवाकर उनके सतीत्व की रक्षा की। गांव वालों ने उस दुष्ट घुडला खान का कटा हुआ सिर बच्चियों को सौंप दिया। बच्चियो ने घुडला खान के सिर को घड़े पर रख कर उस घड़े में जितने घाव घुडला खान के शरीर पर हुये, उतने छेद किये और फिर पुरे गाँव में घुमाया एवं हर घर में रोशनी की गयी। तभी से घुडला त्यौहार मनाया जाता है।

➢ **नववर्ष**

- यह चैत्र शुक्ल एकम को मनाया जाता है।
- इस दिन हिन्दुओं का नया वर्ष शुरू होता है।
- हिंदी पंचांग में इस तिथि का बहुत अधिक महत्व है।

➢ **वसन्तीय नवरात्र**

- यह नवरात्र चैत्र शुक्ल एकम से नवमी तक चलते है।
- इसमें इन नौ दिनों में माँ दुर्गा की पूजा की जाती है।

➢ **अरुंधति व्रत**

- यह व्रत चैत्र शुक्ल एकम से चैत्र शुक्ल तृतीया तक चलता है।

➢ **अशोकाष्टमी**

- यह चैत्र शुक्ल अष्टमी को मनाया जाता है। इस दिन अशोक वृक्ष की पूजा की जाती है।

➢ **रामनवमी**

- यह त्यौहार अंतिम नवरात्र (चैत्र शुक्ल नवमी) के दिन भगवान श्री राम के जन्म दिन पर मनाया जाता है।
- इस दिन रामायण का पाठ किया जाता है।
- श्रद्धालुगण सरयू नदी में स्नान करके पुण्य लाभ कमाते है।

➢ **आखा तीज/अक्षय तृतीया**

- यह वैशाख शुक्ल तृतीया को मनाया जाता है।
- यह एक अबूझ सावा है।
- इस दिन राजस्थान में सर्वाधिक बाल विवाह होते है।
- इस दिन किसान लोग अपने हल एवं सात अन्ना की पूजा करते है और शीघ्र वर्षा होने की कामना करते है।
- इसी दिन सतयुग एवं त्रेतायुग का आरम्भ माना जाता है।

➢ **वट सावित्री व्रत (बड़मावस)**

- यह ज्येष्ठ अमावस्या को मनाया जाता है।

अध्याय – 12

राजस्थान के लोक देवता एंव लोक देवियाँ

लोक देवी

➢ करणी माता

- करणी माता चारणों की कुलदेवी एवं बीकानेर के राठौड़ों की इष्ट देवी हैं।
- 'चूहों वाली देवी' के नाम से विख्यात हैं।
- जन्म सुआप गाँव (जोधपुर) के चारण परिवार में हुआ था।
- इनके बचपन का नाम रिद्धु बाई था।
- करणी माता का मंदिर को मठ कहलता है।
- मंदिर - देशनोक (बीकानेर)।
- करणी माता के मंदिर में पाए जाने वाले सफेद चूहों को **काबा** कहा जाता हैं।
- यहाँ सफेद चूहे के दर्शन करण जी के दर्शन माने जाते हैं।
- राव जोधा के समय मेहरानगढ़ दुर्ग की नींव करणी माता ने रखी।
- करणी माता की गायों का ग्वाला-दशरथ मेघवाल था।
- राव कान्हा ने इनकी गायों पर हमला किया ।
- महाराजा गंगासिंह ने इस मंदिर के लिए चांदी के किवाड़ भेंट किया ।
- करणी जी की इष्ट देवी 'तेमड़ा माता' हैं । करणी जी के मंदिर के पास तेमड़ाराय देवी का भी मंदिर है ।
- सफेदचील को करणी माता का रूप माना जाता है ।
- करणी जी के मठ के पुजारी चारण जाति के होते हैं।
- चैत्र एवं आश्विन माहकी नवरात्रि में मेला भरता है ।
- देशनोक बीकानेर में करणी माता के मंदिर की नींव स्वयं करणी माता ने रखी थी।
- करणी माता के इस मंदिर में दो कढ़ाई स्थित है, जिनके नाम - **"सावन-भादो कड़ाइयाँ"** हैं।

चरजा - चारण देवियों की स्तुति चरजा कहलाती हैं। जो दो प्रकार की होती हैं।
1. सिधाऊ - शांति/सुख के समय उपासना
2. घाडाऊ - विपत्ति के समय उपासना

➢ जीण माता

- चौहान वंश की आराध्य देवी ।
- ये धंधराय की पुत्री एवं हर्ष की बहन थी।
- मंदिर में इनकी अष्टभुजी प्रतिमा है।
- इनके इस मंदिर का निर्माण पृथ्वीराज चौहान प्रथम के समय राजा हट्टड़ द्वारा करवाया गया।
- जीणमाता की अष्टभुजा प्रतिमा एक बार में ढ़ाई प्याला मदिरा पान करती है ।
- इन्हें प्रतिदिन ढाई प्याला शराब पिलाई जाती है ।
- जीणमाता का मेला प्रतिवर्ष चैत्र और आश्विन माह के नवरात्रों में लगता है।
- जीणमाता तांत्रिक शक्तिपीठ है । इसकी अष्टभुजी प्रतिमा के सामने घी एवं तेल की दो अखण्ड ज्योति सदैव प्रज्वलित रहती हैं ।
- जीणमाता का गीत राजस्थानी लोक साहित्य में सबसे लम्बा है ।
- जीणमाता का अन्य नाम भ्रामरी देवी है ।

➢ कैला देवी

- करौली के यदुवंश (यादववंश) की कुल देवी ।
- इनकी आराधना में लागुरिया गीत गाये जाते हैं ।
- कैला देवी का लक्खी मेला प्रतिवर्ष चैत्र मास की शुक्ला अष्टमी को भरता है।
- कैला देवी मंदिर के सामने बोहरा की छतरी है ।

➢ **शिला देवी**

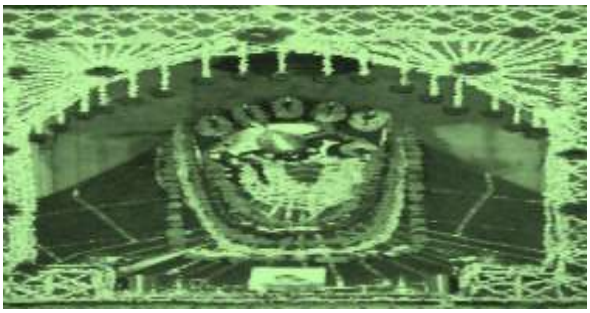

- जयपुर के कछवाहा वंश की आराध्यदेवी / कुलदेवी ।
- इनका मंदिर आमेर दुर्ग में है ।
- शिलामाता की यह मूर्ति पाल शैली में काले संगमरमर में निर्मित है ।
- आमेर के महाराजा मानसिंह प्रथम द्वारा पूर्वी बंगाल के राजा केदार को पराजित कर 'जस्सोर' नामक स्थान से अष्टभुजी भगवती की मूर्ति ।6वीं शताब्दी में आमेर लाए थे।
- आमेर लाकर उन्होंने आमेर दुर्ग में स्थित जलेब चौक के दक्षिणी-पश्चिमी कोने में मंदिर बनवाया था।
- मान्यता है कि इस देवी की जहाँ पूजा होती है उसे कोई नहीं जीत सका ।

➢ **जमुवायमाता**

- ढूँढाड़ के कछवाहा राजवंश की कुलदेवी ।
- इनका मंदिर जमुवा रामगढ़, जयपुर में है।
- इस मंदिर का निर्माण कछवाहा वंश के दुलहराय द्वारा मंदिर का निर्माण करवाया गया।

➢ **आई माता**

- सिरवी जाति के क्षत्रियों की कुलदेवी है ।
- इनका मंदिर बिलाड़ा गाँव (जोधपुर) में है।
- इनके मंदिर को 'दरगाह' व थान को 'बड़ेर' कहा जाता है।
- ये रामदेवजी की शिष्या थी।
- इन्हें मानी देवी (नवदुर्गा) का अवतार माना जाता है।
- इनके मन्दिर में मूर्ति नहीं होती तथा जलने वाले दीपक की ज्योति से केसर टपकती रहती है । इनके मन्दिर का पूजारी दीवान कहलाता है ।

➢ **राणी सती**

- वास्तविक नाम 'नारायणी'।
- 'दादीजी' के नाम से लोक प्रिय।
- झुंझुनू में हर वर्ष भाद्रपद अमावस्या को मेला भरता है ।
- इन्होंने हिसार में मुस्लिम सैनिकों को मारकर अपने पति की मृत्यु का बदला लिया और स्वयं सती हो गयी ।
- राज्य सरकार ने ।९४४ में इस मेले पर प्रतिबंध लगा दिया क्योंकि ।९४७ में देवराला (सीकर) में "रूपकंवर" नामक राजपूत महिला सती हो गयी थी।

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम देखने के लिए क्लिक करें -

RAS PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=p3_i-3qfDy8&t=1253s

VDO PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari - https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=2s

PTI 3rd grade - https://www.youtube.com/watch?v=iA_MemKKgEk&t=5s

- RAS Pre. 2021 की परीक्षा में हमारे नोट्स में से 74 प्रश्न आये थे , जबकि cutoff मात्र 64 प्रश्न पर गयी थी /
- दोस्तों, राजस्थान SI 2021 (15 सितम्बर) की परीक्षा में हमारे नोट्स में से पेपर - 1 & 2 में 200 प्रश्नों में से 126 प्रश्न आये थे, cutoff से ज्यादा /

अन्य रिजल्ट -

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्न
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	30 नवम्बर	66 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)

RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)

& Many More Exams like UPSC, SSC, Bank Etc.

FREE SAMPLE

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

नोट्स खरीदने के लिए इन लिंक पर क्लिक करें

Whatsapp - https://wa.link/nr1tcz

Online order - https://cutt.ly/o0zXjbh